



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

ग्रहणी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 34

अंक : 68 वाँ

संयुक्तांक (अक्टूबर, 2022-मार्च, 2023)



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

प्रहरी परिवार



श्री रामावतार शर्मा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



सुश्री पुष्पलता
उपमहालेखाकार



श्री शिव शंकर
उपमहालेखाकार



श्री के.एस.एम. रफी
उपमहालेखाकार



श्री राकेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री दिवाकर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री विनय कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री मनोज कुमार नं.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री शंकरा नन्द झा
हिन्दी अधिकारी



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

68वाँ अंक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
महालेखाकार भवन,
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 34

अंक : 68 वाँ

संयुक्तांक (अक्टूबर, 2022-मार्च, 2023)

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

प्रकाशन

प्रहरी

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने हैं। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

✍ संपादक मंडल

प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

आवरण पृष्ठ : लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह की तस्वीरें

साज-सज्जा : निशा ग्राफिक्स, नाला रोड, पटना-800 004
मो०- 9708124620

मूल्य : राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

साभार: पत्रिका में प्रकाशित चित्र गूगल साइट से लिया गया है। इसका उपयोग गैर व्यवसायिक है।



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 34

अंक : 68 वाँ

संयुक्तांक (अक्टूबर, 2022-मार्च, 2023)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

श्री रामावतार शर्मा

महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

श्री शिव शंकर

उपमहालेखाकार

सुश्री पुष्पलता

उपमहालेखाकार

श्री के.एस.एम. रफी

उपमहालेखाकार

श्री राकेश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिवाकर राय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विनय कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं.1

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (संपादक)

श्री राजू कुमार सिंह

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शंकरा नन्द झा

हिन्दी अधिकारी

इस अंक में

क्रम0 सं0	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	आपका पत्र मिला			9
2.	सम्पादक की कलम से....			12
3.	ओ आइ ओ एस—एक परिचय	लेख	राजू कुमार सिंह	13
4.	कार्यालयीन व्यवहार	लेख	वीरेंद्र साहू	15
5.	इलेक्ट्रिक वाहन और वायु प्रदूषण	लेख	मनोज कुमार नं.—1	18
6.	ऑडिट दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का प्रतिवेदन	लेख	शंकरा नन्द झा	21
7.	किसलय	कविता	जयप्रकाश मल्ल	24
8.	वो वक्त भी अब नहीं...	कविता	विकास कुमार	25
9.	दौरा कार्यक्रम एवं आपका स्वास्थ्य	लेख	मनोज कुमार नं.—1	26
10.	माँ	कविता	पी० सी० सिन्हा	27
11.	वक्त बुरा हो या अच्छा गुजर ही जाता है	लेख	रामौतार प्रसाद	28
12.	भोलू का सफर	कहानी	विजय कुमार ठाकुर	29
13.	गौरैया	कविता	एस.पी. तनेजा	31
14.	नव वर्ष सुशांत मनोहर हो	कविता	श्रीमती दिव्या नाथ	32
15.	खेल प्रशिक्षक (क्रिकेट) के रूप में श्री अखिलेश शुक्ला की विशेष उपलब्धियाँ	लेख		33
16.	दुःख तो होता है	कविता	के० एम० जयपुरियार	35
17.	अँगूठा	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	36
18.	सौराष्ट्र डायरी	संस्मरण—लेख	के० एम० जयपुरियार	37
19.	अनुत्तरित प्रश्न	लेख	राजू कुमार सिंह	43
20.	आँखों की शोखी	कविता	अलख प्रसाद	44
21.	सेवानिवृत्ति			45
22.	श्रद्धांजलि			46
23.	हिंदी पखवाड़ा—2022 की झलकियाँ			47
24.	लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह की तस्वीरें			48
	(i) निबंध प्रतियोगिता			48
	(ii) रंगोली प्रतियोगिता			49
	(iii) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता			50
	(iv) प्रभात फेरी एवं स्वच्छ भारत कार्यक्रम			51
	(v) ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम			52
	(vi) पैनल डिस्कसन कार्यक्रम			53
	(vii) सांस्कृतिक कार्यक्रम			55

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार



संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 68वें अंक के ई-संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी पत्रिकाओं का असीम योगदान रहा है। कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को निरन्तर बढ़ाना हम सब का संवैधानिक दायित्व है। "प्रहरी" इस लक्ष्य की प्राप्ति में एक सशक्त माध्यम है। कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा के उन्नयन में "प्रहरी" की भूमिका प्रशंसनीय है। इसके माध्यम से कार्मिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी मदद मिलती है।

मुझे आशा है कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों के लिए रुचिकर और ज्ञानवर्धक साबित होंगी। कार्यालय के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में बहुमूल्य योगदान दिया है, उन सबको मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए, मैं संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ।

जय हिन्द !

(रामावतार शर्मा)

उपमहालेखाकार (प्रशासन)



संदेश

मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 68 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग के द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में "प्रहरी" ने काफी मदद की है। कार्यालय के रचनाकारों की सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने में इस पत्रिका का विशेष योगदान तो है ही, हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में भी इससे कार्मिकों को प्रेरणा मिलती है।

मैं आशा करती हूँ कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ पाठकों को पसंद आएगी एवं उनका ज्ञानवर्धन भी होगा। कार्यालय के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी सृजनात्मक रचना से पत्रिका के इस अंक को सँवारने में बहुमूल्य योगदान दिया है, उन सबको मेरी ओर से शुभकामनाएँ। यह पत्रिका कार्यालय के कर्मिगण के लिए अपनी सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। आशा है "प्रहरी" निरन्तर अपनी सृजन-यात्रा को ऐसे ही गतिशील बनाए रखेगी। संपादक मण्डल तथा इसके प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देती हूँ।

जय हिन्द !

पुष्पलता

(पुष्पलता)

आपका पत्र मिला



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल Indian Audit And Accounts Department Principal Accountant General (A&E), West Bengal

संख्या/ No. प्रा. हिंदी सेवा/पत्रिका/2022-23/150

दिनांक/ Dated: 07.11.2022

सेवा में,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी (पहरी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन,
बीरबंद पेटल मार्ग, पटना-800 001

विषय: कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'पहरी' के 67वें अंक की ई-प्रति की पावती एवं अभिमत।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका 'पहरी' के 67वें अंक (वर्ष 2022) की एक ई-प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के आंतरिक-पृष्ठ पर छापकित छायाचित्र एवं पृष्ठों की सज-सज्जा बहुत ही सुंदर है, साथ ही साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहीत हैं। विशेषकर श्री के.ए. जयपुरीयार की 'गुह्यक' आलेख में जीवन में निद्रा की सही मात्रा की मिलन आवश्यकता होगी के यह सज्जनपूर्ण रूप से किया गया है। श्री वीरेंद्र साहू की 'जनकवि नागार्जुन' आलेख में हिंदी के क्रांतिकारी साहित्यकार बाबा नागार्जुन की पूर्ण जीवन यात्रा दर्शाई है। श्रीमती दिव्या नाथ की कविता 'बचपन फिर तुम लौट के आओ' ने बचपन की भावनाओं से मन को छुड़ाया। इसके अलावा श्री संजय चन्द द्वारा की 'मैं जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी', श्री ललन कुमार सिंह की कविता 'मैं', श्री राजकुमार सिंह की कविता 'दीप' भी आनंद होकर पढ़नीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(चन्दन कुमार बड़ौती)
हिंदी अधिकारी/पत्रा-हिंदी

ट्रेजरी बिल्डिंग, 2, गवर्नर प्लेस, वेस्ट, कोलकाता - 700 001
Treasury Buildings, 2, Government Place West, Kolkata - 700 001
Phone: (033) 2213 8000, Fax: (033) 2248 7849
e-mail: agwestbengal@cag.gov.in Web Site: <http://agwb.cag.gov.in>



प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं. 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं. 0172-2603824
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail - agaharyana@cag.gov.in

हिंदी/कस/पत्रि./2022-23/237
दिनांक: 05.12.2022

सेवा में

वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार,
पटना।

महोदय,

विषय: कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका 'पहरी' के 67वें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 12.10.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका 'पहरी' के 67वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री विकास कुमार नं.-1 का लेख 'भारतीय संदर्भ में वैश्विक महामारी: एक पुनरावलोकन', श्री अश्विष कुमार का लेख 'पर्यावरण संरक्षण और मानव जीवन', श्री अमित कुमार झा का लेख 'अम्लीय वर्षा' एवं श्री शंकरा नंद झा का लेख 'मैं जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी' बहुत ही जानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री जय प्रकाश मल्ल की कविता 'सच के बाद', श्री वीरेंद्र कुमार नं.-4 की कविता 'मैं पेड़ हूँ' एवं श्री रमेश कुमार सिंह की कविता 'ईमानदारी' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट अविष्म हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
प्र. सि. सिंह
हिंदी अधिकारी



कार्यालय प्रधानमहालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा साहू, तेनामपेट, चेन्नई -18

सं. प्रमले. (लेप.-II)/हि.अ./प्रशास पत्र /7-38/2022-23/

दिनांक: 21.10.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना।

विषय: हिंदी ई-पत्रिका 'पहरी' के सड़सठवें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय के हिंदी पत्रिका "पहरी" के सड़सठवें (67वें) अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। "पहरी" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। हिंदी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका में वीरेंद्र साहू की "जन कवि नागार्जुन", जय प्रकाश की "सच के बाद", अजय कुमार झा की "महाराजी की नींद", गोपाल कुमार की "हम पेड़ जरूर लगाएंगे", श्रीमती दिव्या नाथ की "बचपन तुम फिर लौट कर आओ" आदि समाविष्ट रचनाएँ सरल भाषा में हैं और रोचक, जानवर्धक एवं उच्च कोटि की हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की सज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं।

"पहरी" के उत्तम संपादन, गुणवत्ता, रचनात्मकता एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
वी. चित्र
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नर प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता - 700 001



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail: agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या: हिंदी कस/हिंदी पत्रिका/पावती/193
दिनांक: 20.10.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

विषय: कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका 'पहरी' के 67वें अंक की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांक: प्रमले.पत्र/हि.अ./2021-22/34 दिनांक: 11.10.2022 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी ई-पत्रिका 'पहरी' के 67वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक सज-सजावट एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ प्रेरणादायक हैं। विशेष रूप से श्री शंकरा नंद झा द्वारा लिखा गया लेख 'मैं जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी' एवं श्री अमित कुमार झा द्वारा लिखा गया लेख 'अम्लीय वर्षा' अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्रीमती
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

आपका पत्र मिला

File No.Admin/HindiCell/SammatiseSambandhit/

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -प्रथम) म.प्र.
ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्षा/सम्मति/ जावक- दिनांक: 15/02/2023

प्रति,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार, (लेखापरीक्षा), बिहार पटना
महालेखाकार भवन
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना

विषय - हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 67 वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 67 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका की साज - सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अति प्रासंगिक, गानवर्धक एवं उच्च स्तरीय हैं। श्रीमती दिव्या नाथ द्वारा लिखित कविता "बचपन फिर तुम लौट के आओ", श्री अनिल कुमार द्वारा लिखित "तीज", श्री शंकरा नन्द झा द्वारा लिखित लेख "मैं जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी", श्री वीरेन्द्र कुमार द्वारा लिखित कविता "मैं पेड़ हूँ" एवं श्री विजय कुमार ठाकुर द्वारा लिखित "हमारी बिटिया रानी" आदि रचनाएँ रुचिकर एवं पठनीय हैं। शेष रचनाएँ भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

Rashmi Mishra

लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी कक्षा

वरिष्ठ

File No../22/2022-23

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, लाहौर 440001

संख्या.राजभाषा 8(II)/2022-23/जा.क्र.

दिनांक:- 10/02/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय : हिंदी ई-पत्रिका 'प्रहरी' के 67वें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका 'प्रहरी' के 67वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री वीरेन्द्र साहू, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'जनकवि नागार्जुन', श्री जय प्रकाश मल्ल, सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'सच के बाद' तथा श्री अभिषेक कुमार, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'पर्यावरण संरक्षण और मानव जीवन' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

WASIM MINHAS, HO(AMG-I HINDI CELL)-WM, HINDI CELL

हिंदी अधिकारी

File No..../11005/02/2021-22/

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.भा.अ./एच-11005/02/2022-23/ दिनांक: 17/10/2022

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना - 800 001

विषय:- त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 67 वें अंक की प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 67 वें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट तथा संवहणीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख राजभाषा संबंधित नीतियों के अनुपालन हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमों में यह बहुत ही उपयोगी तथा सहायक है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(बलबीर सिंह)

Balbir Singh

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा अनुभाग



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व लट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओडिशा)



स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23/

दिनांक- 10.11.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार,
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग,
पटना - 800001
ईमेल- anubalbir@rajasthan.gov.in

विषय- हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 67वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" का 67वाँ अंक प्राप्त हुआ हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री वीरेन्द्र साहू	जनकवि नागार्जुन
2.	श्री शंकरा नंद झा	मैं जानकी की प्राकट्य स्थली सीतामढ़ी
3.	श्रीमती दिव्या नाथ	बचपन फिर तुम लौट के आओ
4.	श्री रमेश कुमार सिंह	ईमानदारी

इस पत्रिका को सफल एवं उत्कृष्ट बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,

(कोटि श्री)

हिंदी अधिकारी

सूचना सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarjyecoast@cg.gov.in / najibasha.pda@gmail.com

आपका पत्र मिला



कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड



"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून-248195

पत्रांक: 26/हि०प्र०/2022-23/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/691 दिनांक 02.11.2022

सेवा में

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 67 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "प्रहरी" का 67 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं जानवर्क हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहीत है एवं राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को धंधाई तथा पत्रिका की अग्रिम प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी

ई-मेल द्वारा

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003



Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

संख्या: हि.क./बाह्य पत्रिका/2022-23/628

दिनांक:-09.11.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी अनुभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 67वें संस्करण की पावती के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" का 67वाँ संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं जानवर्क हैं। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक धंधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया

हिन्दी अधिकारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

कार्यालय - महालेखाकार (ले०-1), ओडिशा, भुवनेश्वर
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-1), ODISHA, BHUBANESWAR



सं.- हि.प्र.को./पावती(14)/2022-23/233

दिनांक- 16.12.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय - महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 67वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "प्रहरी" के 67वें अंक की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण एवं सज-सज्जा अति उत्तम है। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करने हेतु संपादक मंडल धंधाई के पात्र हैं। सभी रचनाओं में लचीलता और सृजनात्मकता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका के सभी लेख, कवितारें, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं जानवर्क हैं। सामाजिक विषयों से जुड़े लेख सराहनीय हैं।

पत्रिका में बच्ची द्वारा प्रस्तुत चित्रांकन अत्यंत प्रशंसनीय है। कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका में पार-घोंट लगा रहे हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी



सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA
PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DARSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/191
दिनांक: 21.10.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 67वें अंक की ई-प्रति।

महोदय,

आपके पत्र संश्लेष/प.ले./अ.हि./34/2022-23/51 दिनांक: 11.10.2022 द्वारा प्राप्त हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 67वें अंक की ई-प्रति संधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाहित भारतीय संदर्भ में वैश्विक महामारी: एक पुनरावलोकन, पर्यावरण संरक्षण और मानव जीवन, हमारी विविधता रानी तथा हम पेड़ जरूर लगाएँ रचनाएं विशेष रूप से पठनीय व प्रशंसनीय हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति हेतु संपादक मंडल को हार्दिक धंधाई तथा शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी
हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दूरभाष: 0172-2640704, 2615377 फ़ैसल: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agauharyana@cag.gov.in
C:\Users\Admin\Desktop\Word 1.docx

सम्पादक की कलम से.....



भारत की पहचान इसकी विविधता अर्थात् बहुआयामी संस्कृति, खानपान, पहनावा, बोलियों, पर्व-त्योहारों आदि से है। हमारा देश अनेक भाषाओं से समृद्ध है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारत की पहचान होने के साथ-साथ हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों को संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी बनाती है। यह एक सरल, सहज और सुगम भाषा है जो विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है। दुनिया भर में बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो हिंदी बोलते समझते हैं और प्यार करते हैं। हिंदी भारत की राजभाषा होने के बावजूद अंग्रेजी का बोलबाला है। ऐसी स्थिति में हिंदी भाषियों का यह कर्तव्य बनता है कि वे हिंदी भाषा को समृद्ध और प्रचारित करने में अहम भूमिका निभाएं। हमें हिंदी भाषा को बचाने और समृद्ध करने के लिए, सक्रिय रूप से काम करना चाहिए। ऐसे में भारत की राजभाषा-हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए, प्रतियोगिताएं, कार्यशालाएं और प्रभावी अभियान जरूरी हैं। हमें भारत की पहचान की रीढ़ हिंदी भाषा को संरक्षित और समृद्ध करने के लिए, सक्रिय रूप से काम करने का संकल्प लेना चाहिए।

यह सुखद है कि दिसंबर 2022 में बिहार के दो कवियों को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने की घोषणा हुई। मैथिली में मधुबनी निवासी युवा कवि और साहित्यकार अजित आजाद को और हिन्दी के लिए, भोजपुर के श्री बद्री नारायण को साहित्य अकादमी पुरस्कार दिये जाने की घोषणा

हुई। श्री बद्री नारायण को उनकी कविता संग्रह 'तुमड़ी के शब्द' के लिए यह पुरस्कार मिला है। बिहार के दोनों साहित्यकारों को 'प्रहरी परिवार' की ओर से बधाई।

प्रहरी का 68वाँ ई-संस्कारण आपके नजरों के सामने है। उम्मीद है कि यह अंक भी सभी पाठकों को पसंद आयेगा। संपादक मण्डल पत्रिका के संरक्षक तथा सभी परामर्शी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता है जिनके बहुमूल्य परामर्श पत्रिका को बेहतर बनाते हैं। जिन रचनाकारों ने अपनी रचनाएं दी हैं उन सबको हृदय से धन्यवाद देता हूँ। उनके योगदान से ही प्रहरी लगातार प्रकाशित होती रही है। सामान्य अनुभाग के कार्मिक भी बधाई के पात्र हैं। जिनका हमेशा से सहयोग मिलता रहा है।

आप सभी सुधि पाठकों के प्रतिक्रिया के इंतजार में....

आपका

(मनोज कुमार)

ओ आइ ओ एस - एक परिचय



राजू कुमार सिंह

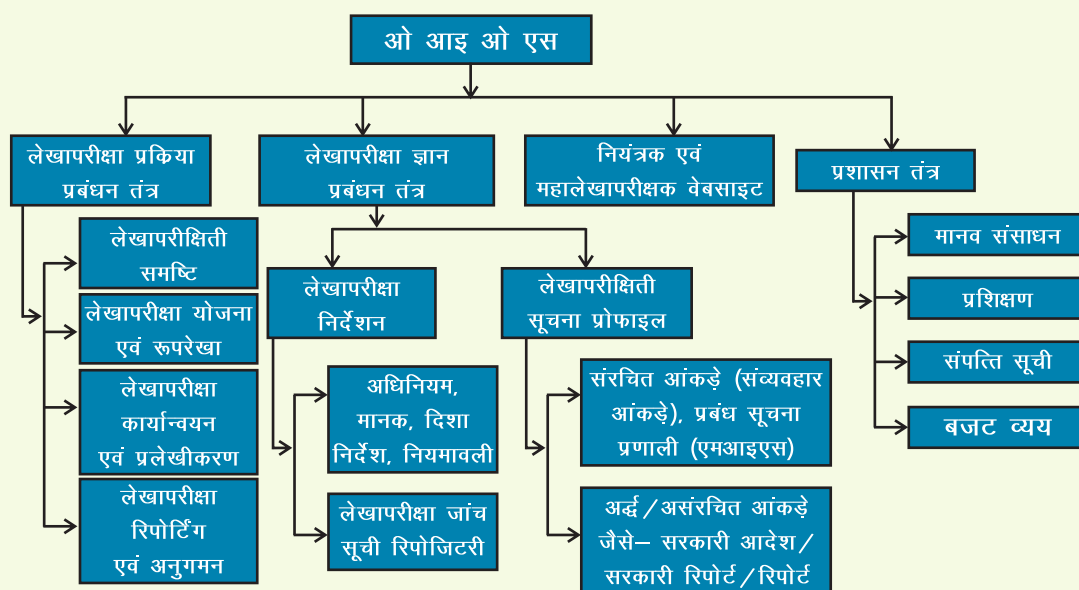
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षक एक ज्ञानकर्मी होता है क्योंकि ज्ञान उसका कार्यकारी औजार होता है। ज्ञान स्थिर नहीं होता वरन यह गतिशील होता है। इसे अद्यतन रखने के लिए निरंतर सीखने की आवश्यकता होती है। अतएव भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग (आई०ए०एण्ड ए०डी०) एक शिक्षण संगठन है जहां अध्ययन, कार्य का अभिन्न अंग हो चुका है। अध्ययन के कई स्वरूप हो सकते हैं यथा—अपनी त्रुटियों से सीखना, दूसरों के अनुभव से सीखना, परम्परागत प्रक्रिया से सीखना और नवीनतम ज्ञान अर्जित करना। ज्ञान प्रबंधन आई०ए०एण्ड ए०डी० का महत्वपूर्ण हिस्सा है। नये लेखापरीक्षा प्लेटफार्म, ओ०आइ०ओ०एस०, का एक पृथक मोड्यूल—ज्ञान प्रबंधन तंत्र (नॉलेज मैनेजमेंट सिस्टम—के०एम०एस०) ज्ञान कोश (रिपोजिटरी आफ नॉलेज) के रूप में कार्य करता है।

वन आई०ए०एण्ड ए०डी० वन सिस्टम (ओ आइ ओ एस) परियोजना का उद्देश्य आई०ए०एण्ड ए०डी० के लेखापरीक्षा क्रियाकलाप के लिए सत्य के एकल स्रोत का निर्माण करना है। आई०ए०एण्ड ए०डी० में कई सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण विद्यमान हैं जो एक या एक से अधिक कार्यालयों की आवश्यकता को पूरी करते हैं। ओ आइ ओ एस के द्वारा विभिन्न सूचना प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों के बेहतरीन कार्यप्रणाली को एक साथ लाकर एकल उद्यम व्यापी (enterprise-wide) आई०टी० अनुप्रयोग में समाहित किया गया है। यह आई०ए०एण्ड ए०डी० के किसी भी लेखापरीक्षा कार्यालय द्वारा समनुरूप बनाकर उपयोग में लाया जा सकता है।

दृष्टि कथन के अनुसार, ओ आइ ओ एस लेखापरीक्षा दल से लेकर ऊपर के कर्मचारियों को दक्ष बनाकर हमारे लेखापरीक्षा को ज्यादा प्रभावी बनाएगा तथा आद्योपांत सूचना प्रौद्योगिकी समाधान की निपुण अवस्था, विघ्नरहित एकीकरण और प्रक्रियागत कार्यप्रवाह के माध्यम से हमारी लेखापरीक्षा प्रक्रिया को अधिक कौशलयुक्त और प्रभावी बनाएगा।

लेखापरीक्षा प्रक्रिया प्रबंधन में शामिल कार्यप्रवाह को निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है—



यह सम्पूर्ण लेखापरीक्षा क्रियाकलाप (लेखापरीक्षा योजना और रूपरेखा से, लेखापरीक्षा संपादन के द्वारा निरीक्षण प्रतिवेदनों को निर्गत करना एवं अनुवर्ती कार्रवाई, लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों को तैयार करना और अंतिम रूप देना तथा अनुवर्ती कार्रवाई) के लिए अभिलेखों का प्राथमिक तंत्र (सत्य का एकल स्रोत) होगा। सभी क्रियाकलाप सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र के माध्यम से संपन्न होंगे, घटनोत्तर अभिलेखीकरण नहीं होगा। एकमात्र सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र सभी लेखापरीक्षा कार्यालयों में समरूप प्रारूप में अविरुद्ध और विश्वसनीय आंकड़े सुनिश्चित करेगा।

यह सभी प्रक्रियाओं को सम्मिलित करेगा – लेखापरीक्षिती समष्टि (आडिट यूनिवर्स), लेखापरीक्षा योजना और रूपरेखा, लेखापरीक्षा मांग-पत्र/ज्ञापन को आनलाइन तैयार करना, लेखापरीक्षा प्रतिवेदन को आनलाइन तैयार करना और संसाधित करना (सहायक अभिलेखों को अपलोड करने को शामिल करते हुए), निरीक्षण प्रतिवेदनों पर अनुवर्ती कार्रवाई, लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों को तैयार करना, निरीक्षण प्रतिवेदनों/लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों पर अनुवर्ती कार्रवाई, कार्रवाई टिप्पणियों (एटीएन) और कार्रवाई प्रतिवेदनों (एटीआर) को तैयार करना।

यह सभी प्रकार के लेखापरीक्षा को समाहित करेगा – अनुपालन, वित्तीय और निष्पादन। ओ आइ ओ एस के आवश्यक विशिष्टियों में स्थानीय भाषा (अंग्रेजी और हिन्दी को छोड़कर) का भी सहयोग शामिल होगा। लेखापरीक्षिती सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र के साथ इंटरफेस, जहां तक जरूरी और व्यवहारिक हो, पर भी विचार किया जाएगा।

ओ आइ ओ एस समस्त लेखापरीक्षा कार्यालयों के लिए सामान्य मुख्य संरचना और न्यूनतम आवश्यक अनिवार्य कार्यात्मकता के साथ एक व्यापक सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र होगा। लेकिन विभिन्न कार्यालयों के लिए अन्य कार्यात्मकता हेतु अनुरूपण/अनुकूलन की भी सुविधा प्रदान करेगा।

ओ आइ ओ एस को लागू करने से अनेक मासिक/त्रैमासिक विवरणियों (आंतरिक से क्षेत्र लेखापरीक्षा कार्यालयों और नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय को) से मुक्ति मिलेगी। ओ आइ ओ एस अनुरूपित डैसबोर्ड के साथ प्रबंधन सूचना तंत्र को शामिल करेगा और आवश्यक स्तर तक विस्तृत सूचना निष्कासन विशेषता, सभी प्रकार के डिवाइस पर सुलभ और कर्मचारियों के जानने की आवश्यकता के आधार पर, सशक्त बनाने और स्वामित्व की भावना से युक्त होगा।

ओ आइ ओ एस लेखापरीक्षा प्रक्रिया खासकर लेखापरीक्षा संपादन को बेहतर और समयोचित सहयोग प्रदान करेगा। ओ आइ ओ एस मानव संसाधन और सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र प्रशिक्षण के साथ लेखापरीक्षा ज्ञान प्रबंधन तंत्र को एकीकृत/जोड़ने का कार्य करेगा। तकनीकी दृष्टिकोण से ओ आइ ओ एस को एक क्लाउड आधारित, खुले स्रोत और वेब सक्षम रूप से परिकल्पित किया गया है।

ओ आइ ओ एस बड़े डेटा का संचालन करेगा जिसके लिए दो उन्नत सुरक्षा वैशिष्ट्य युक्त डेटा केन्द्र बनाए जाएंगे। आई0ए0एण्ड ए0डी0 के पास पहले से ही एनआइसी नेट की संयोजकता (कनेक्टिविटी) विद्यमान है, लेकिन ओ आइ ओ एस के लिए टेलीकाम कंपनियों से बैंडविड्थ पट्टे पर लेना पड़ेगा। एक आपदा पुनर्प्राप्ति (डिजास्टर रिकवरी) केन्द्र भी बनाया जाएगा। ओ आइ ओ एस के कार्यप्रवाह प्रबंधन तंत्र में वर्तमान प्रक्रिया और क्रियाकलाप (रूल इंजन) को सही ढंग से अभिग्रहित करना होगा। प्रारंभ में ओ आइ ओ एस के लगभग 27000 उपयोगकर्ता होंगे। अतएव नेटवर्किंग, डेटाप्रबंधन, उद्यम स्तर पर समाधान और नेटवर्क सुरक्षा के लिए विभिन्न वेंडरों से सूचना प्रौद्योगिकी समाधान भी प्राप्त करना होगा।

अंततः हम कह सकते हैं कि अगर सम्यक् रूप से उपयोग किया जाए तो ओ आइ ओ एस कागजरहित वातावरण और डिजिटल प्रतिवेदन की सुविधा प्रदान करेगा। ♦



कार्यालयीन व्यवहार



✍ वीरेंद्र साहू
पूर्व कनिष्ठ अनुवादक

सरकारी या निजी कार्यालयों में सकारात्मक एवं उत्पादक कार्य आधारित वातावरण सृजित करने हेतु अच्छा कार्यालयीन व्यवहार नितांत अनिवार्य है। किसी भी संस्थान की कार्योत्पादकता, उन्नति और प्रतिष्ठा बिना अच्छे व्यवहार के संस्थापित नहीं की जा सकती है। चूंकि हमारे व्यवहार से ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण होता है और जैसा व्यक्तित्व होगा वैसा ही हमारा आचरण और कार्यशैली होगी और बिना अच्छी कार्यशैली के अच्छे कार्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस संबंध में मुझे महात्मा गांधी की एक कहानी याद आ रही है जो अक्सर मैंने अपने बुजुर्गों के मुँह से सुनी है कि एक बार की बात है एक बच्चा जो बहुत मीठा खाता था, उसकी माँ उसकी इस आदत से काफी परेशान रहती थी। वह उसे गांधीजी के पास ले गयी और उनसे आग्रह किया कि वे उस बच्चे को समझाएं। इस पर गांधीजी ने उस माँ से कहा कि आप दो सप्ताह बाद आइये मैं आपके बच्चे को समझाने का प्रयास करूंगा। दो सप्ताह बीतने के बाद जब वह महिला अपने बच्चे के साथ गांधीजी के पास पहुँची

तो गांधीजी ने उस बच्चे को प्यार से समझाया कि बेटे ज्यादा मीठा खाना तुम्हारी सेहत के लिए अच्छा नहीं है और तुम्हारी भलाई के लिए ही तुम्हारी माँ तुम्हें अधिक मीठा खाने से मना करती है। इसलिए माँ की बात तुम्हारे ही हित में है। तब महिला ने गांधीजी पूछा कि यह बात तो आप इसे दो सप्ताह पहले भी समझा सकते थे फिर आपने मुझे दो सप्ताह के बाद आने को क्यों कहा? इस पर गांधीजी ने मुस्कुराते हुए कहा जब आप दो सप्ताह पहले मेरे पास आयी थीं तब मैं स्वयं अधिक मीठा खाता था और इस स्थिति में, मैं किसी और को भला कैसे अधिक मीठा न खाने की सलाह देता। इसलिए मैंने इन बीते दो सप्ताह में पहले खुद की आदत में बदलाव लाया और जब मैं आश्वस्त हो गया तभी मैंने बच्चे को सलाह दी। अर्थ यह हुआ कि पहले स्वयं में वह सुधार कीजिए जो आप दूसरों से अपेक्षा करते हैं



यह कहानी कहाँ तक सच है यह तो मुझे मालूम नहीं पर इस कहानी से मिली शिक्षा हम सब के सामाजिक एवं कार्यालयीन जीवन में बेहद प्रासंगिक और अनुकरणीय है ।

कार्यालय में काम करते वक्त कार्मिक को पेशेवर आचरण बनाए रखने की आवश्यकता होती है। कार्यालयीन जीवन में आपको अपने पद के अनुरूप पेशेवर हुनर को निरन्तर बनाये रखना होता है। मसलन यदि आप एक टंकक हैं तो अपने टंकण कार्य के प्रति आपकी जवाबदेही तो है ही साथ ही, उससे संबंधित आनुषंगिक कार्यों के प्रति भी आपकी उत्तनी ही जवाबदेही है । टंकण कार्य में गति के साथ शुद्धता का भी उत्तना ही महत्व है । जैसे कि एक अनुवादक को हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर पकड़ बनाए रखना, अपने शब्द—भण्डार को निरन्तर समृद्ध करते रहना, आस—पास हो रही घटनाओं तथा उनके प्रसंगों के बारे में जानकारी रखना, दोनों भाषाओं की पत्रिकाओं, समाचारपत्रों आदि का अध्ययन करना व नये शब्दों के अर्थों व पर्यायों से रूबरू होते रहना चाहिए । साथ ही लगातार अभ्यास करते रहना चाहिए ताकि वे अपने अनुवाद की शैली व गुणवत्ता में निरन्तर सुधार ला सकें । समय के साथ नयी तकनीकों का इस्तेमाल कर स्वयं को अद्यतन करते रहना भी आवश्यक है; तभी आप अपने पद के साथ न्याय कर सकते हैं । किसी काम में लगने वाले समय का आकलन कर उसे प्राथमिकता के आधार पर तय सीमा के अंदर उसका निष्पादन करना पेशेवर आचरण का परिचायक है ।

कार्यालय में अपने वरिष्ठों, सहकर्मियों तथा अपने अधीनस्थ कर्मियों के प्रति उचित सम्मान तथा कार्यस्थल पर नैतिक आचरण अच्छे कार्यालयीन व्यवहार का एक महत्पूर्ण अंग है । कहा भी गया है कि सम्मान पाने के लिए सम्मान करना पड़ता है । अपने वरिष्ठ अधिकारियों से तो हमें सम्मान से बात करनी ही चाहिए बल्कि अपने अधीनस्थ कर्मियों को भी उचित सम्मान देना चाहिए । कार्यालय भी एक परिवार की तरह है और यहाँ पदस्थापित सभी अधिकारी/कर्मचारी भी ठीक वैसे हैं जैसे कि

परिवार में कोई पिता है, कोई माँ, कोई भाई, कोई बहन है सबके अपने—अपने दायित्व निर्धारित हैं । सबको अपना—अपना काम करना है और एक—दूसरे के प्रति सहयोग की भावना बनाए रखनी है ताकि सभी काम सुगमता से पूरा हो सके । अपने अतर्मन में एक दूसरे के प्रति कटु भावना, द्वेष, घृणा, क्रोध जैसे नकारात्मक भाव नहीं लाने चाहिए । कभी—कभी कार्यालय में किसी विषय पर बातचीत के दौरान आपस में विवाद की स्थिति बन जाती है, ऐसी स्थिति न बने ऐसा प्रयास करना चाहिए । सभी से मधुरतम संबंध हो, मधुरतम संवाद हो यही हमारा प्रयास होना चाहिए ।

कार्यस्थल पर कार्मिकों को कार्यालयीन मर्यादा व गरिमा के अनुरूप उचित रूप से कपड़े पहनना चाहिए । आपकी वेश—भूषा से आपकी शालीनता प्रकट होनी चाहिए । ज्यादा भड़काऊ व चटकीले रंगों के कपड़े पहनने से बचें । कार्यालय में जोर—जोर से बात नहीं करनी चाहिए ताकि दूसरे कर्मियों को उनके कार्य में बाधा उत्पन्न न हो । कार्यालयीन अवधि में निजी कार्यों हेतु ज्यादा देर तक मोबाईल से बात करना भी अशिष्टता का द्योतक है । यदि किसी अधीनस्थ कर्मी से काम के दौरान कोई गलती हो भी जाए तो उस पर चिल्ला कर बोलना या धार्मिक, जातिगत या निजी टीका—टिप्पणी करना तथा अपशब्द कहना असभ्यता तथा कार्यालयीन मर्यादा के विपरीत है । कार्यालय में जोर—जोर से मोबाईल या कम्प्यूटर पर संगीत बजाना या विडियो देखना या अपने वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष ब्लूटूथ या हेडफोन लगाकर उपस्थित होना कार्यालयीन गरिमा के विरुद्ध आचरण है । हमेशा याद रखें कि आपका व्यवहार आपके अधीनस्थों के लिए उदाहरण और प्रेरणादायक होता है । अपने वरिष्ठों के अनुभवों तथा उनके सदाचरण से उनके अधीनस्थ कार्मिक काफी सीखते हैं और उनका अनुकरण करते हैं । इसलिए अपने व्यवहार का पैमाना इतना उच्च रखें कि आपसे अधीनस्थ कर्मी हमेशा उस स्तर को पाने का प्रयास करें और एक व्यवहार कुशल कार्मिक बन सकें और

कार्यालय में आदर्श अनुशासन बना रहे । अपने वरिष्ठों से सम्मानपूर्वक बात करना, उनके द्वारा आवंटित कार्यों पर सम्यक और उचित निष्पादन, जरूरी पड़ने या मांगने पर आदेश लेकर उचित सलाह देना भी अच्छे कार्यालयीन व्यवहार का अहम हिस्सा है । साथ ही, अधीनस्थ कर्मियों के प्रति प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए । उनके द्वारा सुझाये गये उपाय कभी-कभी मुश्किल कार्य को भी आसान बना देते हैं । इसलिए अधीनस्थ कर्मियों से उचित सलाह अवश्य लेनी चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर उसे अमल में भी लाया जा सकता है । साथ ही, कार्यालय से इतर निजी जीवन में भी एक-दूसरे का हाल-चाल लेते रहना चाहिए । इससे आपसी सौहार्द बना रहता है और लोग एक-दूसरे के काम आते हैं साथ ही कार्यालयीन माहौल भी हलका-फुलका और बेहतर बना रहता है । यदि किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की कोई आवश्यकता हो बिना संकोच के अपने सामर्थ्य अनुसार उचित सहयोग करना चाहिए ।

कार्यालय में निर्धारित समय से पहुँचना व निकलना चाहिए । यदि आप बीमार हैं या किसी निजी कार्य से कार्यालय आने में विलम्ब हो रहा है या कार्यालय आने में असमर्थ हैं तो इसकी सूचना सक्षम

प्राधिकारी को उचित माध्यम से देनी चाहिए । जिससे आपको आवंटित कार्य के निष्पादन हेतु कार्यालय द्वारा इस कार्य को प्राथमिकता के आधार पर वैकल्पिक व्यवस्था कर पूरा किया जा सके । कर्मियों को अपने कार्यालय की कार्यविधि, नियमावली का भी अवश्य ज्ञान होना चाहिए । जिससे की जानकारी के अभाव में की गयी गलतियों से बचा सके । हमेशा नये-नये नियमों व निर्गत आदेशों के प्रति सजग रहें ।

अंत में, उपर्युक्त बातों के साथ-साथ काम के प्रति लगन, अनुशासन, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, जवाबदेही बनाए रखें और हमेशा याद रखें कि अच्छे काम के लिए अच्छा स्वास्थ्य होना भी आवश्यक है । इसमें शारीरिक व मानसिक दोनों स्वास्थ्य आवश्यक हैं । काम करें, काम का अवसाद न पालें क्योंकि काम करने के लिए स्वस्थ होना आवश्यक हैं । इसलिए योग और व्यायाम करें इससे आपका तन और मन दोनों स्वस्थ रहेंगे । अच्छा और संतुलित आहार लें क्योंकि जैसा खाएंगे अन्न वैसा होगा मन और मन अच्छा होगा तभी आपका व्यवहार भी अच्छा होगा ।

(सम्प्रति:- पूर्व मध्य रेल दानापुर में राजभाषा विभाग में कनिष्ठ अनुवादक के पद पर कार्यरत)



इलेक्ट्रिक वाहन और वायु प्रदूषण



✍ मनोज कुमार नं.-1

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पर्यावरण में बढ़ते वायु प्रदूषण के प्रमुख कारणों में वाहनों से निकलने वाले जहरीले धुआँ की भारी मात्रा है। मानव स्वास्थ्य के लिये अत्यंत हानिकारक वायु प्रदूषण में वाहनों से होने वाला प्रदूषण इसमें एक उल्लेखनीय भूमिका निभाता है।

हाल में ही आए सर्वे के अनुसार विश्व के 10 सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में से 9 भारत में स्थित हैं। ग्रेटर नोएडा, नोएडा, लखनऊ, पटना, मोतिहारी और दिल्ली सहित ये सभी शहर उत्तर भारत में स्थित हैं। भारत में धीरे-धीरे लेकिन निरंतर रूप से इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रसार को प्रोत्साहित किया जा रहा है। वर्ष 2019 में वित्त मंत्री ने अपना पहला भाषण पढ़ते हुए देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए खरीदारों को आयकर में छूट और ऐसे वाहनों पर लगने वाले जीएसटी को 12% से घटाकर 5% कर दिया था। इसके अतिरिक्त सामान्य तौर पर, इलेक्ट्रिक वाहनों की परिचालन लागत कम होती है, क्योंकि इनकी संचालन प्रक्रिया सरल होती है और ये पर्यावरण के लिये भी अनुकूल होते हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत में, इलेक्ट्रिक वाहन के लिये ईंधन की लागत लगभग 80 पैसे प्रति किलोमीटर है।



इसकी तुलना में, आज भारतीय शहरों में 100 रुपए प्रति लीटर से अधिक के पेट्रोल मूल्य के साथ पेट्रोल-संचालित वाहनों पर 7-8 रुपए प्रति किलोमीटर का खर्च आता है। इन सभी कारणों से भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग में तेजी आई है। यद्यपि चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी और धीमी चार्जिंग की समस्या के कारण तथा सब्सिडी दिये जाने के बावजूद ये वाहन अभी भी आम आदमी से दूर है।

जैसे-जैसे इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या बढ़ेगी बिजली की मांग भी बढ़ेगी। इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए विद्युत घरों की भी आवश्यकता होगी। नीति आयोग के आंकड़ों के मुताबिक देश में कोयले से बिजली उत्पादन का लक्ष्य 2014 के 159 गीगावाट की तुलना में 2023 तक 450 गीगावाट करने की है। इसके लिए होने वाले कोयले की वार्षिक खपत में 660 मिलियन टन की तुलना में 1800 मिलियन टन की वृद्धि होनी है। नीति आयोग यह भी बताता है कि कोयले से बिजली बनाने में पूर्व में कार्बन डाइ ऑक्साइड के होने वाले उत्सर्जन 1,590 मिलियन टन प्रतिवर्ष की बजाए 4,320 मिलियन टन का उत्सर्जन होगा। इससे पार्टिकुलेट मैटर, सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन आदि का उत्सर्जन भी वर्तमान की तुलना में कम-से-कम दो से तीन गुना होने की संभावना है। इससे वायु प्रदूषण जनित रोगों के कारण प्रतिवर्ष होने वाली मौतों के भी दोगुने से तीन गुने तक होने की संभावना जताई जा रही है। अकेले सांस व अस्थमा के मरीजों की संख्या बढ़कर 42.7 मिलियन



हो जाने की आशंका है। स्पष्ट है कि बिजली की लगातार बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए वर्तमान में भारत के पास कोयला ही सबसे बड़ा और उपलब्ध विकल्प है। इलेक्ट्रिक वाहनों को चार्ज करने के लिये आवश्यक बिजली की मांग को पूरा करने के लिये भी अधिक कोयले को जलाने की जरूरत पड़ेगी। इसके लिए आंध्र प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, बिहार और झारखंड आदि राज्यों के प्लांटों की क्षमता में तीन गुना और कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश स्थित प्लांटों की क्षमता में दोगुने की वृद्धि करने की आवश्यकता पड़ेगी। पर्यावरणविदों का मानना है कि इससे वायु प्रदूषण में वर्तमान की तुलना में और अधिक वृद्धि देखने को मिलेगी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बैटरी चालित इलेक्ट्रिक वाहन वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान नहीं है बल्कि ये समस्या को बढ़ाने वाले ही हैं। इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक कबाड़ (ई-वेस्ट) का

निस्तारण भी एक बड़ी समस्या बनकर उत्पन्न होने वाली है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2019 में देश में कुल 759,600 इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री हुई थी और 2025 तक इसमें 10 गुना से अधिक की वृद्धि का अनुमान है। इसके साथ ही प्रयोग के बाद बेकार होने वाली बैटरियों में भी इतनी ही वृद्धि अनुमानित है। भारत में लिथियम आयन बैटरियों का इस्तेमाल अधिकतम हो रहा है जबकि देश में इसके निस्तारण की क्षमता अभी न के बराबर है। बैटरियों से भारी मात्रा में निकलने वाले लेड, खतरनाक धातुओं और रसायनों से बड़ी चुनौती पैदा होने की आशंका है।

अभी तक विकसित देशों में भी पुराने लिथियम आयन बैटरियों में से लिथियम को पूरी तरह निकालने की क्षमता विकसित नहीं हो सकी है। यूरोपीय देशों में भी अबतक खराब बैटरियों में से महज 5% लिथियम ही निकाला जा पाता है और बाकी लिथियम या तो जमीन में गाड़ दिये जाते हैं या फिर जला दिये जाते हैं।

स्विट्जरलैंड की सरकार ने हाल ही में इसे बढ़ावा देने की बजाए नियमित करने और प्रयोग को नियंत्रित करने का फैसला लिया है। इस में कुछ सीमित सेवाओं के लिए ही इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग की अनुमति देने की बात कही गई है। इस के पीछे विद्युत उत्पादन में फॉसिल एनर्जी (जीवाश्म उर्जा अर्थात कोयला जलाने) और इसके परिणाम स्वरूप वायु प्रदूषण में वृद्धि का हवाला दिया गया है।

इस प्रकार, स्पष्ट है कि भारत में वायु प्रदूषण रोकने और स्वच्छ ऊर्जा के नाम पर इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दिया जाना वर्तमान परिवेश के हिसाब से अधिक कारगर प्रतीत नहीं होता है। इससे सिर्फ प्रदूषण को महानगरों से दूसरे राज्यों में स्थानांतरित करने भर की तरकीब बन कर रह जाने की ज्यादा उम्मीद है। नीति-निर्माताओं को नई नीतियाँ बनाने से पूर्व इलेक्ट्रिक वाहनों का लागत विश्लेषण करना और आम जन के लिए उस खर्च को वहन करने की क्षमता को आधार बनाना अत्यंत

आवश्यक है।

आज सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को बेहतर, पर्याप्त और सुविधाजनक बनाने की आवश्यकता है ताकि अधिक-से-अधिक लोग निजी वाहनों का मोह त्याग कर सकें। कारपुलिंग और राइड शेयर को भी लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता है। विश्व के वैज्ञानिकों को लिथियम के निपटान के उचित उपाय खोजने होंगे। बैटरी को चार्ज करने के लिए सौर ऊर्जा का अधिक उपयोग करना, भारत में परमाणु बिजली घरों की स्थापना करना, अधिक पेड़ों को लगाना इत्यादि उपाय करने होंगे तभी इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रयोग वायु प्रदूषण से मुक्ति दिला सकता है। अन्यथा आसमान से गिरा और खजूर में अटका कहावत ही चरितार्थ होगी।

(संदर्भ: इन्टरनेट पर उपलब्ध विभिन्न स्रोत)



ऑडिट दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का प्रतिवेदन



✍ शंकरा नन्द झा
हिन्दी अधिकारी

बाबा साहब भीमराव अंबेदकर के शब्दों में भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक संभवतः भारत के संविधान में वर्णित सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी हैं। अपने ध्येय वाक्य 'लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा' अर्थात् लोकहित में समर्पित सत्य के प्रति निष्ठावान को आत्मसात करते हुए भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग ने शासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने तथा सुशासन स्थापित करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस विभाग के प्राचीन इतिहास, इसके उद्भव, विकास एवं सतत् उपादेयता को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 16 नवंबर को लेखापरीक्षा दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय के मुख्यालय नई दिल्ली में लेखापरीक्षा दिवस का उद्घाटन भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनकड़ द्वारा किया गया।

तदुपरांत देशभर में स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के 150 से भी अधिक कार्यालयों में लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इसी कड़ी में बिहार राज्य में स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के समस्त कार्यालयों यथा कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय एवं कार्यालय महानिदेशक (लेखापरीक्षा) रक्षा सेवाएं के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 16 नवंबर, 2022 से 24 नवंबर, 2022 तक लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह मनाया गया। लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। उन कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है:-

निबंध प्रतियोगिता: दिनांक 16 नवंबर, 2022 के पूर्वाह्न में 'भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के स्वाधीन भारत में विगत 75 वर्षों के इतिहास' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पूर्व में वर्णित चारों कार्यालयों के अधिकारियों कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। निबंध प्रतियोगिता के प्रथम तीन विजेताओं को उपमहालेखाकार श्री शिवशंकर द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा शेष सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।



रंगोली प्रतियोगिता: उसी दिन अर्थात् दिनांक 16 नवंबर, 2022 के अपराह्न 03 बजे से 05 बजे तक रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें इन कार्यालयों के महिला कर्मियों के साथ-साथ 14 वर्ष से ऊपर के इन कार्यालयों के कर्मिकों के परिवार के महिला सदस्यों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

रंगोली प्रतियोगिता के विजेताओं को श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के कर-कमलों से पुरस्कृत किया गया तथा शेष प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता: लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत दिनांक 17 नवंबर 2022 को पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों हेतु तीन-तीन अधिकारियों कर्मचारियों के 10 टीम बनाए गए थे। इस प्रतियोगिता में टीम शिवाजी प्रथम स्थान पर, टीम टैगोर द्वितीय स्थान पर तथा टीम चंद्रगुप्त तृतीय स्थान पर रही। सभी विजेता समूहों को उपमहालेखाकार श्री के.एस.एम रफी के द्वारा सम्मानित किया गया। शेष प्रतिभागियों को भी सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।



प्रभात फेरी एवं स्वच्छ भारत कार्यक्रम :- राष्ट्र के विकास में शासन की जवाबदेही तय करने तथा सुशासन स्थापित करने में लेखापरीक्षा की भूमिका के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से दिनांक 20-11-2022 को श्री रामावतार शर्मा महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार के नेतृत्व में प्रातः 07.00 से 08.00 बजे तक प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिसमें उपर्युक्त सभी कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण महालेखाकार कार्यालय परिसर से हार्डिंग रोड़, इको पार्क होते हुए पुनः महालेखाकार कार्यालय तक परिभ्रमण किए। इस अवसर पर पारस एच0एम0आर0आई0 अस्पताल पटना के निदेशक डा0 ए0 ए0 हई भी शामिल हुये थे। लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा माननीय प्रधानमंत्री जी के स्वच्छ भारत कार्यक्रम के प्रति लोगों को उत्साहित करने के उद्देश्य से उसी दिन अर्थात् दिनांक 20 नवंबर, 2022 को प्रातः 08:00 से 09:00 बजे तक कार्यालय परिसर से आर-ब्लाक चौराहे तक साफ-सफाई एवं महालेखाकार आवासीय परिक्षेत्र में वृक्षारोपण कार्यक्रम का सफल आयोजन महालेखाकार सहित उप-महालेखाकार उप निदेशक एवं अन्य अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा किया गया।



ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम:- अपने हितधारकों तक पहुँचने, उनके साथ अपने रिश्तों को मजबूत



करने तथा लेखापरीक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से दिनांक 21 नवंबर, 2022 को मुजफ्फरपुर के जिला समाहरणालय सभाकक्ष एवं जहानाबाद जिले के ग्राम प्लेक्स भवन में लेखापरीक्षा आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुजफ्फरपुर जिले में कार्यक्रम का आयोजन उपमहालेखाकार सुश्री पुष्पलता और श्री के.एस.एम. रफी एवं जहानाबाद जिले में उपमहालेखाकार श्री आदर्श अग्रवाल और श्री शिवशंकर के नेतृत्व में संबंधित लेखापरीक्षा टीमों के सहयोग से किया गया। दोनों कार्यक्रमों की अध्यक्षता संबंधित जिलाधिकारियों द्वारा की गई। कार्यक्रम का मुख्य ध्येय वहाँ उपस्थित जिला स्तरीय पदाधिकारियों कर्मचारियों के बीच पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को प्रोत्साहित करने में लेखापरीक्षा के महत्व पर जागरूकता फैलाना था। इस अवसर पर लेखा और लेखापरीक्षा कार्यों से संबंधित एक संक्षिप्त विडियो पावर प्वाइंट प्रस्तुति एवं संवादात्मक परिचर्चा आयोजित की गई। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया तथा इसकी सराहना की गई।

पैनल डिस्कसन:- इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए दिनांक 22-11-2022 को “भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के प्रति जनता की धारणा और इससे अपेक्षाएं” विषय पर एक पैनल चर्चा महालेखाकार कार्यालय के मल्टीपर्स हॉल में आयोजित की गई। पैनल सदस्य के रूप में श्री रामेश्वर सिंह (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.) श्री अरुणिश

चावला (अपर मुख्य सचिव योजना एवं विकास विभाग, बिहार सरकार) श्री प्रभात पी. घोष (वरिष्ठ अर्थशास्त्री आद्री) एवं श्री अरुण कुमार पांडे (स्वतंत्र पत्रकार) द्वारा भाग लिया गया और कार्यक्रम का संचालन श्री रामावतार शर्मा (महालेखाकार (लेखापरीक्षा, बिहार) द्वारा किया गया। चर्चा में “भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक” के महत्व और देश के वित्तीय नियंत्रण में जवाबदेही पारदर्शिता और सुशासन को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया। बिहार की प्रमुख योजनाओं और परियोजनाओं हेतु “भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक” की अहमियत परिणामों पर ध्यान देने की आवश्यकता, समरूप परियोजनाओं के लिए राज्यों में लागत का विश्लेषण और लेखापरीक्षा प्रतिवेदन को संक्षिप्त एवं आसानी से पढ़ने योग्य बनाने जैसे मुद्दों को रेखांकित किया गया। पारस्परिक चर्चा की ऑनलाइन लाइव-स्ट्रीमिंग भी की गई जिसमें पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के छात्रों ने भी भाग लिया।



इस तरह लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह हर्षोल्लास के साथ विभिन्न सार्थक, सकारात्मक कार्यक्रमों को सम्पादित कर मनाया गया।



किसलय



✍ जयप्रकाश मल्ल

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

हरित कणों से वंचित किसलय,
टूट-टूट कर बिखर रहे हैं।
इन्हें कुतरने वाले कीट,
डाली डाली पसर रहे हैं॥

वृक्ष गहन चिंतन में डूबे,
सपन धरा का भी है टूटा।
कौन बिखरे प्राण वायु अब,
लक्ष्य कहाँ पर किसका छूटा॥
रवि का ताप, पात की छाया,
उसने सबका सबकुछ लूटा॥

डोर प्रीत के छिन्न भिन्न कर,
खुद ही कैसे संवर रहे हैं।
हरित कणों से वंचित किसलय,
टूट-टूट कर बिखर रहे हैं॥

नभ में घन भी देख रहा सब,
स्रोत एक नीर का छूटा।
उत्सर्जन से संचित जल का,
चक्रिय क्रम भी कैसे टूटा॥
धरती बंजर हो जाएगी,
अगर नहीं इन सब को रोका॥

आओ मिलकर करें सामना,
दुश्मन भी तो कमर कसे है।
हरित कणों से वंचित किसलय,
टूट-टूट कर बिखर रहे हैं॥



वो वक्त भी अब नहीं...



✍ विकास कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वो बात अब नहीं
हाँ! ये भी सच है
वो वक्त भी अब नहीं।
हाँ! पल में दृश्य वो ओझल हो जाते
जो कभी सपनों में उतर- ठहर जाते।
वो जमाना भी अब नहीं
चिड़ियों की चहचहाट से होती भोर
मधुर कलरव चहुँ ओर।
न कोई प्रदूषण, न कोई शोर।
बगियों में अब भी खिलते फूल
पर, अब न कोई राग-कूक
न रंग-बिरंगे तितलियों के पीछे
दौड़ते- पकड़ते-हँसते बच्चों के झुंड।
अब भी सजते गमले में पड़े मुरझाये फूल
सज रहे अब भी रास्ते-चौबारे
पर अब वो सुगंध कहाँ
मदमस्त करतीं वो बयार कहाँ ?
सब ही सजते...फिरते-भागते
जीवन की एक तलाश में
पर अब वो

जीवन्तता कहाँ... नश्वरता का भी अहसास नहीं।
हाँ! अब भी होती भोर
पर, वो बात अब नहीं
शायद... इस रात की अब वो भोर नहीं।
हाँ! वो बात भी अब नहीं
हाँ ! वो वक्त भी अब नहीं।

(संप्रति:— वित्त एवं मुख्य लेखा अधिकारी
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली)



दौरा कार्यक्रम एवं आपका स्वास्थ्य



✍ मनोज कुमार नं.-1

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा के कार्य सम्पादन हेतु लेखापरीक्षा कार्मिकों को लगातार विभिन्न स्थानों, शहरों का दौरा करना पड़ता है। यह दौरा उनके कार्य का हिस्सा होता है। यात्रा के दौरान एवं विभिन्न शहरों में अस्थाई निवास करने के कारण कार्मिकों को अनेक तरह के कठिनाईयों का भी सामना करना होता है। इसमें होटलों, गेस्ट हाउस की साफ सफाई, मौसम का प्रभाव, शुद्ध पेयजल की उपलब्धता खान-पान, यात्रा की असुविधा इत्यादि प्रमुख हैं।

जब लेखापरीक्षा के कार्मिक अपने स्थाई निवास में रहते हैं तो उनकी दिनचर्या नियमित होती है। उनका खान-पान शुद्ध होता है। बीमार होने पर परिवार का साथ और उचित चिकित्सा सेवा तुरंत मिलती है। यात्रा पर इन सब का अभाव होता है। यात्रा के दौरान कुछ सावधानियाँ रखी जाएँ तो स्वास्थ्य को अच्छा रखा जा सकता है।

प्रायः यह देखा जाता है कि कार्मिक काम की अधिकता के कारण सुबह में चाय पीने के बाद ही ठहराव के स्थान पर कार्य प्रारंभ कर देते हैं जबकि उन्हें सुबह का समय टहलने, योग और प्राणायाम पर अवश्य ही देना चाहिए। ऐसा करना स्वास्थ्य के लिए तो हितकर है ही कार्यहित में भी है। क्योंकि स्वस्थ रहकर ही आप अच्छा कार्य कर सकते हैं। कार्य के दौरान खाने में यथासंभव हरी और मौसमी सब्जियों का ही ध्यान रखा जाना चाहिए। प्रायः रेस्टोरेन्ट में पनीर के साथ में बनी सब्जी मिलती है ऐसे हालात में स्थानीय लोगों से पता कर लें कि मध्यम बजट वाले होटल कहाँ हैं। महंगे रेस्टोरेन्ट के स्थान पर मध्यम साधारण होटल जहाँ ताजा खाना मिलता हो वहाँ खाना चाहिए। पानी की शुद्धता पर अवश्य ध्यान दें। कोशिश करें कि एक जगह का पानी ही पीयें। अगर ठहरने वाले स्थान का, पानी पी रहे हैं तो खाना खाने जाने के समय वहीं का पानी बोतल में साथ लेते जायें।

यात्रा पर जाते समय दवाओं का एक किट अवश्य ही साथ में रखें। जिसमें बुखार, पेट दर्द, दस्त, एलर्जी की दवा एवं ओ० आर०एस० अवश्य ही रहना चाहिए। चोट पर लगाने वाला मलहम इत्यादि साथ रखें। अगर उच्च रक्तचाप एवं मधुमेह की दवा ले रहे हैं तो साथ रखना कदापि नहीं भूलें। साथ ही दवाओं के पूजा की छायाप्रति भी साथ रखें। अगर चश्मा का उपयोग करते हैं तो उनके पावर के पूजा अवश्य रखें ताकि अन्य जगहों पर प्रवास के समय चश्मा के टूटने पर तुरंत चश्मा बनाने का प्रयास किया जा सके।

प्रायः लेखापरीक्षा हेतु एक स्थान पर 10 से 12 दिन रुकना पड़ता है। नये शहर से परिचित होने के लिए ठहराव के स्थान से जिधर जिधर सड़कें जाती हैं उधार 2 किलोमीटर तक अवश्य ही दो-तीन दिनों में घूम लें। इससे आस-पास क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं इसका एक खाका दिमाग में बना रहे

होटल गेस्ट हाउस का फोन/मोबाइल नं० पास के अस्पताल का फोन नं० अवश्य रखना चाहिए। लेखापरीक्षा इकाई के लेखापाल, कार्यालय प्रधान का फोन नं० अवश्य ही रखना चाहिए क्योंकि आकस्मिक स्थिति में स्थानीय लोग ही कारगर सिद्ध होते हैं। लेखापरीक्षा दल के लोग आपस में हमेशा सहयोग की भावना रखें। बाहर में दल ही परिवार होता है जो मुसीबत में काम आता है।

उपर्युक्त बातों का ध्यान रखने पर ही स्वास्थ्य अच्छा रखा जा सकता है जो कार्यालय के हित में भी है। ♦

माँ



✍ पी० सी० सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वर का जो उद्गम हो
वाणी में जो मधुर हो
बोलने में जो सरल हो
सुनने में न कसक हो
अस्तित्व की जनक हो
गोद जिसकी जन्मत हो

आंचल में अमृत हो
जिस से भरण-पोषण हो
जिसके दम से मेरे कदम हो
ज्योति जिसके मेरे नयन हो
वर्णमाला में जो सर्वोत्तम हो
जीवों की जो जननी हो

धरती की जो उपवन हो
वात्सल्य जिसमें प्रकट हो
रिश्तों में जो पवित्र हो
जिस शब्द में सब निहित हो
अनेकों में एक मां शब्द हो ।।



वक्त बुरा हो या अच्छा गुजर ही जाता है



✍ राममौतार प्रसाद

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

वक्त बुरा हो या अच्छा गुजर ही जाता है
दोस्त कैसा भी हो हंसी दे ही जाता है।

पिता का व्यवहार कड़ा हो या नरम, छाया दे ही जाता है
मां रुठी हो या मौन, ममता मिल ही जाती है।

मन में छिपाव भले हो, भाव दिख जाता है
पहाड़ स्थिर रह कर भी धैर्य बता ही जाता है।

धरती को आप कितना सताओ हरियाली दे ही जाती है
फितरत को आप कितना भी बदलें, मौलिकता बता ही जाता है।

नेकदिल इंसान लाख छिपे, दिले-दरिया दिख ही जाता है
गरीब हो या अमीर ईश्वर का साथ मिल ही जाता है।

कालिख के बीच भले आप हों, चमक हीरा सा दिख ही जाता है
रात कितना भी काली हो, सबेरा उजाला ला ही देता है।

समय कितना भी बुरा हो वक्त गुजर ही जाता है
संगति साधू का हो तो साधूता आ ही जाता है।

विचार उत्तम हो भावों में, पथ प्रशस्त हो ही जाता है
कर्मठता हो कार्यों में तो सफलता मिल ही जाता है।

भोलू का सफर



✍ विजय कुमार ठाकुर
लेखापरीक्षक

भोलू का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था, उसके माता-पिता गाँव में रहते थे। वे ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे। उनका जीवन काफी संघर्षमय था। मजदूरी कर घर परिवार का भरण-पोषण करते थे। भोलू के माता-पिता भले ही गरीब थे, लेकिन वे लोग ईमानदार थे। ईमानदारी और मेहनत से जो कुछ कमाते थे, उसी से अपनी जरूरतों को पूरा करते थे। वे लोग अपने बच्चे को बहुत प्यार करते थे। उनके मन में यही इच्छा थी कि हम भले ही किसी कारण से पढ़ नहीं सके, लेकिन वे अपने बच्चे को जरूर पढ़ायेंगे। बिना पढ़े लिखे होने से जो दिक्कतें उनके जीवन में आयीं वे नहीं चाहते थे कि वह उनके बच्चों के जीवन में आए। वे बड़े ही लाड़ प्यार से उनका पालन पोषण करते थे।

भोलू भी जैसा की उसका नाम है वैसा ही सीधा-साधा सरल स्वभाव का था, मन में कोई छल-कपट नहीं था। वह अपने माता-पिता से बहुत प्यार करता था। उनका बहुत ही आदर-सम्मान करता था। भोलू का बचपन गाँव में ही गुजर रहा था, चूँकि वह बहुत भोला था उसके साथी उसे बेवकूफ समझते थे। उसका हँसी-मजाक उड़ाते रहते थे। हमेशा उसे चिढ़ाते रहते थे। वह पढ़ाई पर पूरा ध्यान लगाता, सारा काम भी साथ में करता था। कोई क्या कह रहा है, उसकी कोई परवाह नहीं करता

था। बचपन कुछ इस तरह ही बीत रहा था।

अचानक उसके जीवन में एक नया मोड़ आया। उनकी माता की तबियत खराब हो गयी। काफी कोशिशों के बाद उन्हें बचाया नहीं जा सका। भोलू काफी परेशान और उदास रहने लगा और रोता रहता था। वह अन्दर से टूट चुका था। उसका मन मानने को तैयार नहीं था कि उसकी माँ उसे छोड़कर सदा के लिए चली गयी है। कुछ समय तक उनकी नानी जी ने उसका साथ दिया। पिताजी ने हिम्मत और हौसला दिया तो फिर वह अपने जीवन के सफर में आगे बढ़ने के लिए तैयार हुआ।

अपने माता-पिता के सपनों को पूरा करने के लिए सोचकर आगे बढ़ा। जब वह दसवीं कक्षा में अच्छे अंक से सफल हुआ तो उसके पिताजी काफी खुश हुए कि उनका बेटा, जो मैं नहीं कर पाया वह कर दिखाया है। भोलू और आगे किसी भी हालात में पढ़ने के लिए तैयार था चाहे उसके लिए जो भी करना पड़े वह कोशिश कर रहा था।



भोलू के पिताजी को सब लोग कहने लगे कि उसे अच्छे शहर में पढ़ने के लिए भेज दीजिए। लेकिन उनकी आर्थिक हालत ठीक नहीं थी। वे उसे बाहर शहर भेजकर पढ़ाने में सक्षम नहीं थे। उन्होंने गाँव के ही कॉलेज में उसका नाम लिखा दिया। वह अपने घर से पैदल पढ़ाई के लिए जाता था। कॉलेज में आयोजित होने वाले प्रतियोगिता में भाग लेता था और सफल भी हो जाता था। कॉलेज के प्राध्यापक से भोलू का सम्पर्क हो गया। वे उनके बारे में उसके सफलता के बारे में पिताजी को भी बताते थे। सभी स्टाफ उसकी पढ़ाई में मदद करते थे चाहे वो जिस रूप में हो सके। कभी फीस नहीं पूरा होने पर दे देते तो कभी किताब नहीं रहने पर किताब उपलब्ध करवा देते थे।

इस तरह वह भोलू पढ़ाई पूरा किया। जब परीक्षा का रिजल्ट आया तो उसमें सफल रहा। भोलू तो सिर्फ इसलिए खुश था कि उसके माता-पिता के अरमान पूरे हो रहे थे। वह अपना हिम्मत और हौसला बनाए रखकर आगे का सफर करना चाहता था। कॉलेज के प्राध्यापक भी खुश थे कि उनकी मदद बेकार नहीं गई। उन्हें आगे शहर भेजने के लिए उनके पिताजी को सुझाव दिया। उसके पिताजी भी उनके साथ थे। वे भी चाहते थे कि उनका बेटा पढ़ाई लिखाई में आगे बढ़े। लेकिन वो उसमें सक्षम नहीं थे। तभी अपने एक दूर के रिश्तेदार से अपनी बात बताई तो वे अपने पास रहने के लिए अवसर दिये। भोलू अपने गाँव से शहर की ओर आगे बढ़ गया। शहर में भी रहकर उसका एक ही लक्ष्य था अपने माता-पिता के अरमानों को टूटने न देना और पूरा करना। वह अगली कक्षा में दाखिल हो गया। कॉलेज घर से काफी दूर था। वह पैदल ही कॉलेज आता-जाता था। वह पढ़ाई के साथ-साथ काम की भी तलाश में कोशिश करना शुरू किया। काफी दिक्कतों का सामना करते हुए वह आगे बढ़ रहा था। फिर उसके जीवन में एक नया बदलाव आया जिसमें वह कामयाबी हासिल किया। उसका चयन भारतीय वायु सेना तकनीकी ग्रुप में हो गया। चूंकि उसे ट्रेनिंग का पत्र मिल चुका था कि

उसका चयन अंतिम रूप से हो गया है उसने अपने पिताजी को बताया। चूंकि उसका प्रशिक्षण काफी दूर यानि बेंगलुरु में था, पिताजी की स्थिति ठीक नहीं थी फिर भी वे किसी से कुछ उधार लेकर भोलू को दे दिये ताकि सफर में कुछ खर्च हो तथा कुछ दिनों तक काम चल सके।

भोलू अपने जीवन में आगे बढ़ गया। एक नई दुनिया में आ गया। आगे का सफर भी चुनौतीपूर्ण था जिसे उसे पार करना था। चूंकि वह घर से कभी दूर या अलग नहीं रहा था। जब उसे पहला वेतन मिला तो उसने उसे पिताजी को भेज दिया ताकि जो उधार लिये थे उसे दे सके तथा घर में भी कुछ आर्थिक रूप से मदद हो सके। चूंकि घर पर आर्थिक मदद की जरूरत थी तो वह अपनी तरफ जहाँ तक हो सके मदद किया करता था।

समय बीतता गया और उसने प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया। वह खुश था कि उसने अपने माता-पिता के सपनों को साकार किया। भोलू की वजह से उनके पिता का सम्मान और इज्जत गाँव तथा समाज में बढ़ गयी। बात रिश्तेदारों तक भी पहुँच गयी। सब खुश थे। पिताजी घर पर भोलू के भाई-बहन के साथ रहते थे। जिनके पढ़ाई लिखाई में भी भोलू आर्थिक रूप से मदद कर रहा था। बहन की शादी भी अच्छी तरह से पिताजी ने कर दिया। इस तरह भोलू ने काफी हद तक माता-पिता के सपने को पूरा कर दिया।



गौरैया

याद मुझे आता है
झुंडों में उनका आना
चींचीं का शोर मचाना
सबकी नींद चुराना

घर के आस पास
घूमा वो करती थी
बैठ कभी तारों पर
झूला वो करती थी
घर की दीवारों पर
बैठा वो करती थी
दाना देख आँगन में
टूट पड़ा करती थी।

जब मैं छोटा था
तंग उन्हें करता था
खाने का लालच दे
पकड़ लिया करता था
पीड़ा उनकी मन का
कभी नहीं सोचा था
खेल समझ इसको
खेला मैं करता था
मंशा कभी नहीं थी
दुख पहुँचाने की
पल का आनंद ले
छोड़ दिया करता था।



✍ एस.पी. तनेजा

पेड़ों का कम होना
इनको नहीं भाया था
बिजली की तारों ने
इनको उलझाया था
प्रदूषण का कहर
रास नहीं आया था
इसीलिये शहर छोड़
गावों को अपनाया था।

उपयोगी पक्षी को
दुनियाँ ने पहचाना है
प्रकृति की बेजोड़ कड़ी
सबने इसको जाना है
लुप्त ना हो जल्दी
अभियान चलाया है
पक्षी गौरैया दिवस मना
जागरूक करवाया है।

द्वारा शिव शरण सिन्हा
पूर्व संपादक 'प्रहरी'

नव वर्ष सुशांत मनोहर हो



श्रीमती दिव्या नाथ

बाधाएँ सब थम जाएं
नव प्रभात सभी में रम जाए
हल, जीवन की जटिल पहेली हो
उन्नति मनुज की चेरी हो
मानवता तेरी धरोहर हो
नव वर्ष सुशांत मनोहर हो ।

हो जोश नया, उल्लास नया
लक्ष्य हेतु प्रयास नया
कुछ कर गुजरने का जज्बा
जो तुने अब तक रखा छिपा
वह स्वप्न नेत्रों का सच हो
नव वर्ष सुशांत मनोहर हो ।

हर व्यक्ति स्वस्थ, निरोग रहे
किसी रोग का ना प्रकोप रहे
शुद्ध हवा और जल निर्मल हो
धनवंतरी का आशीष रहे
बगिया धरा की मंजुल हो

नव वर्ष सुशांत मनोहर हो ।
बीता है जो वर्ष अभी
थोड़ी बहुत जो रही कमी
कहता है नव वर्ष यहाँ,
उम्मीद की डोर तोड़ नहीं
आगत का सुंदर स्वागत हो
नव वर्ष सुशांत मनोहर हो ।

द्वारा श्री सुभाष वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



खेल प्रशिक्षक (क्रिकेट) के रूप में श्री अखिलेश शुक्ला की विशेष उपलब्धियाँ

—संपादक मण्डल

श्री अखिलेश शुक्ला ने इस कार्यालय में वर्ष 2013 में लेखापरीक्षक के रूप में (खेल-कूद कोटे से) अपना योगदान दिया था। कार्यालय में अपने सामान्य काम-काज को जारी रखते हुए वे लगातार खेल-कूद की दुनिया से जुड़े रहे हैं तथा पिछले 9 वर्ष के दौरान खेल जगत में उन्होंने अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल किया है।

वर्ष 2021-22 के दौरान वे बिहार पुरुष क्रिकेट टीम के स्ट्रेंथ एवं कंडिशनिंग कोच के रूप में जुड़े तथा इस दौरान बिहार की क्रिकेट टीम ने रणजी ट्रॉफी, विजय हजारे ट्रॉफी, तथा सैयद मुस्ताक अली ट्रॉफी में काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। वर्ष 2022-23 के दौरान बिहार रणजी क्रिकेट टीम ने इतिहास रचते हुए पहली बार प्लेट ग्रुप का खिताब जीत कर एलीट ग्रुप में अपना स्थान बनाया है।

श्री शुक्ला बताते हैं कि इस दौरान बिहार के खिलाड़ियों ने काफी कड़ी मेहनत की तथा एक स्ट्रेंथ एवं कंडिशनिंग कोच के रूप में उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती खिलाड़ियों को फिट रखना तथा अलग-अलग प्रातों में खेले जाने वाले मैचों में खिलाड़ियों को वहां के माहौल के अनुरूप ढालना था।

बिहार की टीम की ओर से खेलते हुए श्री शकीबुल गनी ने अपने पहले ही प्रथम श्रेणी मैच में रिकॉर्ड 341 रन बनाए, जिस पर उन्हें गर्व है। श्री शुक्ला मूल रूप से वाराणसी के निवासी हैं तथा उन्होंने सुप्रसिद्ध बनारस हिंदू विश्व विद्यालय से शारीरिक शिक्षा संकाय में स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की है।

इससे पहले श्री शुक्ला, वर्ष 2019-20 की अंडर 23 टीम तथा वर्ष 2018-19 की अंडर 19 टीम के प्रशिक्षक के रूप में बिहार की पुरुष क्रिकेट टीम के साथ जुड़े रहे हैं तथा वहाँ के खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करते रहे हैं। एक प्रशिक्षक के रूप में श्री शुक्ला पिछले 7 वर्ष से बिहार टीम के अलावा बंगाल तथा त्रिपुरा की टीमों के साथ भी जुड़े रहे हैं। उन्होंने वर्ष 2016-17 तथा वर्ष 2017-18 के दौरान त्रिपुरा के अंडर 19 तथा अंडर 23 टीमों को प्रशिक्षित किया जबकि वर्ष 2015-16 के दौरान वे क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल के जूनियर टीम के साथ जुड़े रहे। वे बिहार राज्य की केंद्रीय विद्यालय की टीम के साथ भी कार्य कर चुके हैं। श्री शुक्ला इसी वर्ष भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग द्वारा आयोजित टी-20 मैच में झारखंड की विभागीय टीम के विरुद्ध 57 गेंदों में शतक बना चुके हैं। इस





टूर्नामेंट में शतक लगाने वाले वे इकलौते खिलाड़ी थे।

श्री शुक्ला बताते हैं कि खेल—कुद तथा कार्यालयीन दायित्वों के बीच सामंजस्य स्थापित करना आसान काम नहीं है लेकिन कार्यालय के सहयोगात्मक एवं

उत्साहवर्धक दृष्टिकोण तथा उनकी व्यक्तिगत प्रेरणा के बदौलत वे इन दोनों जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हैं। अपनी दिनचर्या के बारे में उन्होंने बताया कि वे सुबह 4.30 बजे जग जाते हैं तथा 5.30 बजे तक मैदान में पहुंच जाते हैं। 9 बजे तक वे खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करते हैं।

वर्ष 2016 में उन्हें वरिष्ठ लेखापरीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। श्री शुक्ला लगातार अपनी पेशेवर कुशलता बढ़ाते रहे हैं तथा वे उन गिने-चुने प्रशिक्षकों में से एक हैं जिन्हें ऑस्ट्रेलियन स्ट्रेंथ एवं कंडिशनिंग एसोसिएशन 2020 के लेवल— 2 स्तर का प्रमाणपत्र प्राप्त है। इसके अतिरिक्त भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा आयोजित एन.एस.एन.आई.एस. क्रिकेट कोचिंग में उन्हें गोल्ड मेडल प्राप्त है। साथ ही वे वर्ष 2013 में बी.सी.सी.आई. के 'ओ' लेवल के फिटनेस ट्रेनर का प्रमाण पत्र भी प्राप्त कर चुके हैं। हाल ही में उन्होंने स्पोर्ट्स न्यूट्रिएंट्स कोर्स 2020 तथा सडेन कार्डियाक अरेस्ट कोर्स, एन.एच.एफ.एस, यू.एस.ए. (2020) का प्रमाण पत्र हासिल किया है।

सामान्य कार्यालयीन कार्य करते हुए खेल के प्रति उनके समर्पण तथा उनकी उपलब्धियों हेतु प्रहरी परिवार उन्हें शुभकामनाएं देता है और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। ♦



दुःख तो होता है



✍ के० एम० जयपुरियार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कैलेंडर तो हर साल बदलते हैं
साल दर साल बदलते हैं
पर जब बारह माह बाद
दिसंबर गुजर जाता है न
तो दुख तो होता है।

सूरज तो रोज उगता है
फिर अपनी किरणों को समेट रोज
डूब जाता है
पर जब कंपकंपाती सर्दी में
अपना दरस दिखा
क्षितिज की ओट में छुप जाता है न,
तो दुख तो होता है।

घोंसले नित नए बनते हैं
और फिर बिखर जाते हैं
पर जब अपने हांथों अपने घोंसले को,
तोड़ना पड़ता है न
तो दुख तो होता है।

तानों का क्या,
ये तो मिलते रहते हैं मुफ्त में
गैरों से उपहार की तरह
पर जब ये अपनों से मिलते हैं न
तो दुख तो होता है।

दुश्मनों का वार सीने पर मिले
ये तो वीरों का सम्मान है
पर कोई अपना जब
पीठ पर खंजर भोंकता है न
तो दुख तो होता है।



लोगों का आना जाना
मिलना बिछड़ना,
प्रक्रिया है काल का, इस धरा पर
पर जब कोई अजीज चला जाता है छोड़कर न,
तो दुख तो होता है।

अँगूठा



श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज सुबह जब हाथ धो रहा था
अँगूठा तुनक कर बोला
जरा मुझे ठीक से धोना
थोड़ा साबुन और मलना
भले कपड़े तुम्हारे गंदे रह जाएं
उनकी क्रीच ढीली पड़ जाए
भले बाल तुम्हारे बिखरे रह जाएं
भले दांत आधे साफ
आधे गंदे रह जाएं
सब चलेगा....
पर मुझे नजरंदाज करना
बहुत भारी पड़ेगा
मैं तो सोच रहा था
मेरा जमाना चला गया ।
एक वक्त था....
तुम्हारे दादा— परदादा की संपत्ति का मालिक
मैं ही तो हुआ करता था
फिर जमाना बदला
और तुमने हस्ताक्षर करना क्या सीखा!
कि मेरी अहमियत पर ही सवाल उठने लगे
मैं उस वक्त भी चिल्लाता था
अरे...बिना मेरे तुम हस्ताक्षर भी नहीं कर सकते...!
पर तुमने तो नई बात सीखी थी
अहम में इतने डूबे थे
कि मेरी बात
तुम्हारे कानों तक पहुंचती ही नहीं थी
और वे.....जो मुझे अबतक सबकुछ मानते थे
बैंक में
संपत्ति की खरीद फरोख्त में
मुझे यानी अँगूठे को ही चलाते थे
तुम उन्हें हीन देखते थे
मजाक उनका खूब उड़ाते थे
अच्छा बताओ....!
आज खुदका मजाक नहीं उड़ाओगे?



बिना अँगूठा लगाए
तुम दफ्तर में घुस नहीं सकते, जनाब ।
सुबह आजकल
जो जल्दी उठने लगे हो
हर काम फुर्ती से
जो करने लगे हो
उन सबका दारोमदार मुझपर ही तो है
मैं स्वस्थ रहूंगा
साफ रहूंगा
तो वह इलेक्ट्रॉनिक की डिबिया मुझे पढ़ सकेगी
मुझे पहचान सकेगी
कान खोलकर सुन लो तुम
तुम्हारी पहचान अब मुझसे है
इसलिए कह रहा हूं
जरा महंगे साबुन से
मुझे यानी अँगूठे को
अच्छे से धोना
समझे अँगूठा छाप !

सौराष्ट्र डायरी



✍ के० एम० जयपुरियार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जी हाँ! मेरे देशाटन की सूची में अब तक गुजरात की यात्रा शेष थी। एक दिन अचानक रात में मेरे एक सहकर्मी ने गुजरात घूमने का कार्यक्रम बनाकर मुझे दूरभाष पर जानकारी दी तो उसे मैंने तुरंत स्वीकार कर लिया। हालांकि यात्रा ट्रेन से थी तो थोड़ा मन में उलझन थी कि पटना से अहमदाबाद की लगभग 36 घंटों की लंबी यात्रा ट्रेन से करनी पड़ेगी, पर लगा कि इस कार्यक्रम में चार परिवारों का एक साथ यात्रा करने में ट्रेन की यात्रा का एक अलग सुखद अनुभव होगा, परन्तु जीवन में सबकुछ अपने हाथ नहीं होता है और हुआ भी यही कि अन्य तीन सहकर्मियों ने अपने व्यक्तिगत कारणों से अंतिम समय में यात्रा रद्द करा ली और मैं अकेला बच गया। स्वभावतः अपने निर्णय को मैं नहीं बदल सका, हालांकि पर्याप्त समय होने के कारण वापसी की यात्रा विमान से करने का निश्चय कर लिया।

दिसम्बर माह की कंपकंपाती ठंडी रात में हमने ट्रेन की यात्रा पटना स्टेशन से प्रारम्भ की और अगली सुबह पता चला कि कुहासे के कारण हमारी ट्रेन लगभग छः घंटे विलम्ब से चल रही थी। खैर ! जनवरी 2023 की पहली तारीख और रविवार की सुबह लगभग 3 घंटे विलम्ब से हम गुजरात के महत्वपूर्ण शहर अहमदाबाद पहुंच चुके थे। रेलवे स्टेशन से सीधे हम, पहले से आरक्षित अपने कार्यालय के, अतिथि गृह में पहुंच गये जो शास्त्री नगर में स्थित था। रास्ते में ही पता चला कि सोमवार को विश्व की सबसे उंची प्रतिमा 'स्टेचू ऑफ युनिटि' जो अहमदाबाद से लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर केवड़िया में स्थित है, बंद रहता है। अतः हमने कार्यक्रम में थोड़ा बदलाव कर वहां रविवार को ही जाना उचित समझा। वर्ष का पहला दिन इस अद्भुत पर्यटन स्थल से शुरुआत करना अपने आप में सरदार पटेल जैसे महान व्यक्तित्व के प्रति मेरे लिए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करने जैसा था। वहां मेरे एक संबंधी के द्वारा दिये गये नम्बर से सम्पर्क कर एक गाड़ी की व्यवस्था कर केवड़िया के लिए निकल पड़े। रास्ते में ही वहां का टिकट ऑनलाइन आरक्षित करा लिया।



नर्मदा नदी के बीचोबीच बनी यह 182 मीटर की सरदार वल्लभ भाई पटेल की 'स्टेचू ऑफ युनिटि', जिसे विश्व की सबसे उंची प्रतिमा का दर्जा प्राप्त है, वाकई आधुनिक भारत के शिल्पकार सरदार पटेल का भारतीय इतिहास में उनके कद को चरितार्थ कर रहा था। इनके अंगुठे तक पहुंचने के लिए ही पाँच मंजिल चढ़ना होता है जो स्वचालित सिढ़ियों के कारण आसान हो चुका था। लिफ्ट से पर्यटक कुल 60 मंजिल की इस ऊँची मूर्ति के 45 वें तल तक, जो प्रतिमा का हृदय है, वहाँ तक जा सकते हैं। सचमुच सरदार के हृदय से नीचे भारत भूमि देखना अपने आप में गर्व की अनुभूति देता है। इसके भूतल में एक लाजवाब संग्राहलय है जिसमें भारत के स्वतंत्रता के वीरों की अमर गाथा देखने लायक है। इसके परिसर में स्वचालित तल है जिससे आप बिना किसी स्वप्रयास के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकते हैं और इसके फूड प्लाजा में स्वादिष्ट व्यंजनों के स्वाद का आनंद भी ले सकते हैं। वैसे तो यहाँ के लिए अहमदाबाद से सीधे रेल के द्वारा एकता नगर स्टेशन तक आया जा सकता है और

कम-से-कम तीन दिनों के प्रवास होने पर ही केवड़िया के सभी मनोरम दृश्यों और कार्यक्रमों का आनंद लिया जा सकता है पर हमारे पास सीमित समय होने और अन्य स्थानों के कार्यक्रम होने के कारण हमे वापस अहमदाबाद लौटना पड़ा । रास्ते में हमारे ड्राइवर घनश्याम ने गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र के कई व्यंजन जैसे गाठिया, भजिया, काठियावाड़ी पारम्परिक थाली इत्यादि का आनंद दिलाया और साथ ही हमारे लिए कपास की खेती का नया नजारा भी दिखलाया जहाँ बच्चे कपास को स्पर्श करने की जिद पर अड़ गये । हमने गाड़ी रोककर उनकी फरमाईश पूरी की और फिर कुछ सेल्फी लेने के बाद आगे बढ़ गये । थके-हारे हम अपने अतिथि गृह के कमरे में कब सो गये पता ही नहीं चला ।

सवेरे अतिथि गृह में, अतिथि गृह के केयर टेकर, अमृतलाल जी, ने बड़े प्यार से गाठिया और पोहा गुजराती नाश्ता कराकर हमें अहमदाबाद की सैर के लिए तैयार कर दिया, तभी घनश्याम ने अपने आने की सूचना दी । सबसे पहले हम गाँधी की धरती पर उन्हें

नमन करने के लिए महान विभूति के आश्रम 'साबरमती आश्रम' की ओर चल पड़े । यह आश्रम शहर के प्रसिद्ध साबरमती रिबर फ्रंट के किनारे दर्शनीय स्थल के रूप में बहुत खूबसूरती से विकसित किया गया था । जहाँ आप महात्मा गाँधीजी के जीवन की सम्पूर्ण यात्रा के साक्षी बन सकते हैं । वहाँ लगभग दो घंटे बिताने के बाद हम निकल पड़े भारतीय स्थापत्य कला का एक अद्भूत नमूना प्रसिद्ध रूदाबाई की बावड़ी देखने जो लगभग 1418 ई0 की निर्मित थी । इसका निर्माण राजा कर्ण के प्रपौत्र वीरसिंह की पत्नी रूदा ने कराया था । इस बावड़ी में कुओं के पानी तक पहुँचने के लिए पाँच मंजिल भूतल से नीचे जाना होता है और पत्थरों पर की गयी उसकी नक्काशी देखने लायक है । फिर वहाँ से गाँधी नगर का भ्रमण करते प्रसिद्ध स्वामी नारायण मंदिर 'अक्षरधाम' गये पर वह भी सोमवार को बंद था । अतः बाहर से उसे प्रणाम कर आगे निकल लिए । रास्ते में वैष्णो माता का मंदिर जो जम्मू के कटरा के मूल वैष्णो माता के मंदिर का प्रतिरूप के रूप में बनाया गया है, में बच्चों ने खूब आनंद लिया और साथ ही घनश्याम





के बताये स्थान से स्वादिष्ट फाफड़े और जलेबी खाने का भी। साबरमती नदी के पास नवनिर्मित दर्शनीय अटल टनल के पास एक फलावर शो का भी भरपूर आनंद लेने के बाद भद्रकाली माता मंदिर का दर्शन और फिर वहाँ श्रीमति जी की जम कर खरीदारी जो मेरे क्या अधिकतर पतियों की समस्या है, से रु-ब-रु हुआ। पर इतने से कहाँ उनका मन भरे, आजकल सूचना तकनीक के जमाने में सभी अपनी-अपनी रूचि की जानकारीयां पहले से जुटा कर, पहले से तैयार होते हैं। उन्होंने भी यहाँ का सिटी मार्केट जो गुजरात का प्रसिद्ध गरबा के कपड़े मूलतः लहंगे के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जाने का निर्णय लिया। घनश्याम ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए गाड़ी उसी दिशा में कर ली। उसकी

कुटिल मुस्कान एक पति का हाले दिल बयां करने वाला था। हालांकि वह बाजार सचमुच अतुलनीय था और काफी किफायती दरों में अच्छी गुणवत्ता के लहंगे वहाँ उपलब्ध थे। गुजरात की कुछ बातें जो आपको यहाँ बार-बार आने के लिए आकृष्ट करती है, वो यहाँ के मिलनसार लोग, अपेक्षाकृत सस्ते सामान और स्वादिष्ट शाकाहारी व्यंजन।

अपने सामानों में एक दो संख्या और बढ़ा कर हम अगले सुबह ट्रेन से आदि शंकराचार्य के द्वारा स्थापित चार पीठों में एक 'शारदा पीठ' अर्थात् श्री द्वारिकाधीश की ओर निकल गये। ट्रेन में मेरा परिचय एक सहयात्री सुलेमान जी से हो गया जो वहीं ओखा के निवासी थे और मुंबई में अपना व्यापार करते हैं। उन्होंने हमें रास्ते में गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के बारे में काफी कुछ बताया और फिर जूनागढ़ में रुक कर वहाँ भी घूमने की सलाह दी परन्तु हमारे पास समय सीमित था। अतः उनकी सलाह पर अमल नहीं कर पाया। मैंने भी अपनी आदत के अनुसार योग की बातें छेड़ दी और उनकी कुछ शारीरिक समस्या के लिए कई प्राणायाम की सलाह दे डाली इस तरह मुंगेरी होने का प्रमाण भी दे ही दिया।

लगभग सात घंटों की यात्रा के बाद हमें श्रीकृष्ण की नगरी द्वारिकाधाम की झलक मिली और स्टेशन से ही श्रीद्वारिकाधीश मंदिर के लहराते ध्वजा के भी दर्शन हुए। हमने श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़े और चल पड़े मंदिर के निकट।

**श्रीकृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने प्रणतः
क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः**

यहाँ हमें एक ही रात रुकना था इसलिए होटल की खोज में अधिक समय व्यतीत नहीं कर मंदिर के निकट ही भद्रकाली चौक पर एक छोटे से होटल में अपना पड़ाव डाला। कृष्ण की नगरी, चाहे पूरब का मथुरा-वृंदावन हो या फिर पश्चिम में द्वारिका, प्रेम और आनंद में आपको कोई कमी नहीं दिखेगी। यहाँ की सड़कों पर गुलाबी ठंड में चाय के ठेले पर की गरम चाय के स्वाद ने तो सचमुच हमारा मन मोह लिया। शाम में हमने मंदिर जाकर यहाँ के राजा अर्थात् द्वारिकाधीश के चरणों में अपना शीश नवाया। यहाँ हर शाम अन्य मंदिरों की ही तरह ध्वजा बदला जाता है

पर मान्यता के अनुसार मनोकामना पूरी होने पर लोग ध्वजा बदलने के खर्च को गाजे-बाजे के साथ सहर्ष वहन करते हैं। परन्तु इसका नम्बर आने में वर्षों की प्रतिक्षा भी करनी होती है। मंदिर के उस भीड़ में भी आँखे बंद कर बैठें तो एक असीम शांति का अनुभव होता है। जहाँ एक ओर मथुरा-वृन्दावन में कृष्ण के बाल रूप के ध्यान में मन उनके प्रेम से अभिभूत हो जाता है वहीं दूसरी ओर श्री द्वारिकाधीश में महाराज श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण का भाव उत्पन्न होता है। यहाँ की बलुआही पत्थरों पर की गयी सुन्दर नक्काशी से बने विशाल मंदिर एवं उसमें विराज महाराजाधिराज श्रीकृष्ण की काले पत्थर से बनी अत्यन्त मनमोहक प्रतिमा वाकई दर्शनीय है। मंदिर परिसर में ही आदिगुरु शंकराचार्य के द्वारा स्थापित शारदा पीठ का मंदिर भी आस्था का केन्द्र है। वैसे तो पूरे गुजरात में कानून व्यवस्था कोई समस्या नहीं है फिर भी श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए गुजरात पुलिस अपनी उपस्थिति हर जगह देती है।

कहा जाता है कि असली द्वारिका नगरी को भगवान श्रीकृष्ण ने समुद्र में डुबा दिया था जो विज्ञान के लिए आज भी एक अन्वेषण का विषय है और कई जाँचों में यह प्रमाणित भी हुआ है फिर भी द्वारिका में बना यह विशाल मंदिर भी काफी प्राचीन माना जाता है और हिन्दुओं के आस्था का एक प्रमुख केन्द्र है। यहाँ से लगभग 30 कि०मी० की दूरी पर ओखा है जहाँ से समुद्र के रास्ते आप भेंट द्वारिका, जिसके बारे में कहा जाता है कि श्रीकृष्ण के बालसखा सुदामा जी ने यहां उनसे भेंट की थी, टापू पर जाया जाता है। अगले दिन भद्र काली चौक से ही सरकारी बस से हम भेंट द्वारिका जाने के लिए तैयार थे और रास्ते में द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का भी दर्शन कर लिये। कहते हैं यहां भगवान शिव और माता पार्वती नाग और नागिन के रूप प्रकट हुए थे और भगवान श्रीकृष्ण ने भी कई बार यहाँ उनका अभिषेक किया था।

याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं
विविधैश्च भोगैः ।

सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं
प्रपद्ये ॥

हमने भी भक्ति भाव से भगवान शिव एवं माता

पार्वती को नमन कर एवं इस ज्योतिर्लिंग का दर्शन कर अपने को कृतार्थ समझ भेंट द्वारिका की यात्रा के लिए आगे बढ़ गये। परन्तु मौसम खराब होने के कारण भारतीय नौसेना एवं स्थानीय प्रशासन से किसी भी फेरी को अनुमति नहीं मिलने के कारण हम भेंट द्वारिका नहीं जा सके। परन्तु वहां समुद्र किनारे प्रवासी पक्षी 'फ्लेमिंग' की चहचहाहट ने हम सभी का मन मोह लिया। जिससे भेंट द्वारिका नहीं जा पाने का क्षोभ दूर हो गया। लौटते समय बस वाले ने हमें गोपी तालाब और रुक्मिणी मंदिर का दर्शन भी कराया। रुक्मिणी मंदिर के बारे में कहा जाता है कि इसी स्थान पर भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी पटरानी रुक्मिणी जी की प्यास बुझाने के लिए अपने पैर के अंगूठे को धरती में दबा कर गंगा जी को प्रकट किया था और इसी से क्रोधित होकर ऋषि दुर्वासा ने उन्हें कभी अंतरंग न होने का श्राप भी दिया था। शाम के समय द्वारिकाधीश के मंदिर से लगभग एक किलोमीटर दूर समुद्र में सूर्यास्त का नजारा भी अत्यंत मनमोहक था जिसने हमें कन्याकुमारी के सूर्यास्त के दृश्य की याद दिला दी। और फिर चल पड़े हम वेरावल स्टेशन की ओर अर्थात् सोमनाथ कि लिए जो हमारी यात्रा का अगला पड़ाव था।

सोमनाथ में हमने पूर्व में ही sornath.org की साईट पर लीलावती बेन अतिथि गृह का आरक्षण करा रखा था। हम अगली सुबह तड़के 6 बजे ही वहां



पहुंच गये जबकि उसका चेक इन समय सुबह 11 बजे का था। संयोग से वहां मेरे एक मित्र रोचक जी पहले से थे क्योंकि उन्होंने एक दिन अपना कार्यक्रम बढ़ा लिया था। अतः सीधे उनके कमरे में हम चले गये और उनका चेक आउट समय प्रातः 10 बजे का था जिससे पहले ही अतिथि गृह वालों ने हमें हमारा कमरा सुपुर्द करा दिया। जिस कारण रोचक भाई ने अपना सामान मेरे कमरे में स्थानान्तरित कर लिया और इस प्रकार बाबा सोमनाथ की कृपा से दोनों की समस्या का निदान हो गया।

**सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं
चन्द्रकलावतंसम् ।**

**भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं
प्रपद्ये ॥**

अहले सुबह बाबा सोमनाथ के दर्शन कर हमलोगों ने सर्वप्रथम 'गिर' जाने का निश्चय किया, जो विश्व प्रसिद्ध भारतीय शेरों का सबसे बड़ा आश्रय स्थल है। यहाँ का जीप सफारी काफी प्रसिद्ध है परन्तु ऑन लाइन टिकट उपलब्ध नहीं होने के कारण हमने देवलिया अभ्यारण्य जो उसी गिर का हिस्सा है, के जीप सफारी का टिकट बुक करा लिया। यह एक घंटे की सफारी होती है जबकि गिर नेशनल पार्क की तीन घंटे की। हालाँकि गिर में लगभग 575 शेर हैं फिर भी इनका आपसे मुलाकात आपकी किस्मत पर है परन्तु देवलिया में इसकी संभावना अधिक है। यह लगभग सोमनाथ से 50 कि०मी० की दूरी पर है जहाँ आप सड़क या मीटर गेज की ट्रेन से भी जा सकते हैं। हमारी किस्मत अच्छी थी जिस कारण शेरों के पूरे परिवार से हमारी मुलाकात हो गयी। साथ ही चीता, नीलगाय एवं हिरण इत्यादि भी दिख गये। यहाँ की यात्रा के लिए अहमदाबाद वाले ड्राइवर घनश्याम ने पहले से ही अपने मित्र की गाड़ी बुक करा दी थी। घनश्याम के हम शुक्रगुजार थे क्योंकि उसने गुजरात यात्रा में हमारा कुशलक्षेम पूछकर अपने अच्छे स्वभाव का हमें परिचय दिया। शाम में वापस सोमनाथ आकर हमने रोचक जी को विदा किया और अतिथि गृह में वापस लौट गये। चूंकि इस यात्रा में हम प्रतिदिन कहीं न कहीं घूम रहे थे इस कारण काफी थक चुके थे। अतः अगले पूरे दिन सोमनाथ में रह कर बाबा सोमनाथ के शरण में रहने का निश्चय किया।

वास्तव में सोमनाथ 12 ज्योतिर्लिंगों में प्रथम है। कहा जाता है कि चन्द्रदेव का विवाह प्रजापति दक्ष की 27 कन्याओं के साथ हुआ था परन्तु इनमें से रोहिणी को सबसे अधिक प्रेम करते थे जिससे अन्य पत्नियों ने अपने पिता प्रजापति दक्ष से इसकी शिकायत कर दी थी और दक्ष ने गुस्से में उन्हें श्राप दे दिया था। जिससे उनके प्रभास का क्षय होने लगा। इस क्षेत्र को प्रभास क्षेत्र भी कहते हैं। पुराणों के अनुसार आज से लगभग 3 करोड़ वर्ष पूर्व चन्द्रदेव ने 10 करोड़ महामृत्युन्जय मंत्रों का जाप कर भगवान शिव को प्रसन्न किया था जिससे प्रजापति दक्ष के द्वारा दिये गए उनके प्रभास का क्षय होने का श्राप मिट गया और शिव कृपा से वापस वे अपने पूर्व की भांति प्रभास युक्त हुए।

शाम में यहाँ के 'प्रकाश एवं ध्वनि' का कार्यक्रम का आनन्द लेना अतुलनीय है। यह मंदिर वास्तव में सनातन धर्म के यात्रा की कहानी कहती है जिसमें कई बार इसके विनाश और सृजन की कथा है। इतिहास गवाह है कि किस प्रकार विदेशी आक्रांताओं के द्वारा इसकी समृद्धि को लूटा गया फिर भी इसका अस्तित्व आज भी उसी प्रकार है जैसा पूर्व में था। दोनों ओर विशाल समुद्र से घिरे इस मंदिर के परिसर में आपको एक असीम शांति का अनुभव होता है। इसमें लगे एक दिशासूचक यंत्र तीर जो उत्तर से दक्षिण की ओर है। कहते हैं इसके दक्षिण की ओर जाएं तो पृथ्वी के दक्षिण ध्रुव तक भी जाएंगे तो कोई स्थल नहीं बल्कि जल ही जल मिलेगा जो इसके स्थापत्य में भूगोल के अदभुत ज्ञान का परिचायक है। मैंने इसके गर्भ गृह में कुल पाँच बार दर्शन किये और प्रभु की आराधना का सुख प्राप्त किया। वर्तमान मंदिर परिसर में स्थापित शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा देश के प्रथम राष्ट्रपति स्व० श्री राजेन्द्र प्रसाद ने किया था। इसके पुनःनिर्माण में सरदार पटेल और वहाँ के राजा दिग्विजय सिंह का योगदान है। इस विशाल मंदिर कोरिडोर के बाहर लगी वीर हमीर जी गोहिल की विशाल प्रतिमा इनके सोमनाथ को बचाने के लिए विदेशी आक्रान्ताओं से लड़ते-लड़ते अपने प्राण न्योछावर करने की कहानी बयां करती है। कहा जाता है इन्होंने अपने नवजात पुत्र का मुँह देखने के बजाय सोमनाथ को बचाने के लिए लड़ने को प्राथमिकता दी परन्तु भारतीय इतिहास में इनको अपेक्षित स्थान नहीं प्राप्त है।

दक्षिण गुजरात जो सौराष्ट्र के रूप में विख्यात है, के एक ओर द्वारिका है तो दूसरी ओर सोमनाथ और यह पूरा क्षेत्र समुद्र के किनारे है जिसकी यात्रा अगर सड़क मार्ग से की जाए तो यह कम समय के साथ एक मनोरम यात्रा होता है। साथ ही रास्ते में पोरबन्दर, सुदामा गांव आदि का भ्रमण हो जाता है। हालांकि हमने यात्रा ट्रेन से की थी अतः मन में इसकी कसक रह गयी।

सोमनाथ में हमने एक सी.एन.जी. ऑटो वाले श्रवण से सम्पर्क किया जिसने हमें आस-पास के मंदिर यथा राम मंदिर, त्रिवेणी संगम जो हिरण्य, कपिला और सरस्वती नदियों का संगम है, के भी दर्शन कराये। यहीं पास में भाल तीर्थ क्षेत्र है जिसके बारे में कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण द्वारिका को समुद्र में डुबोने के बाद यहीं पर एक वृक्ष की डाली पर लेटे थे कि तभी एक व्याध ने अपने तीर से उनके चरण कमलों को विंध दिया और प्रभु ने अपने देह का त्याग किया था। श्रवण ने इतनी आत्मीयता से हमें घुमाया कि हमने अगले दिन केन्द्रशासित प्रदेश 'दीव' के लिए पहले से आरक्षित कार को रद्द कर उसी के ऑटो से वहां जाने का फैसला कर लिया। अगली सुबह बाबा सोमनाथ से विदा लेकर हम 'दीव' के लिए निकल पड़े। 'दीव' एक बहुत कम आबादी वाला समुद्री टापू क्षेत्र है जो एक खूबसूरत पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित है। वहां का पुराना किला, समुद्र के बीचोबीच जेल, पांडवों के द्वारा स्थापित गंगेश्वर महादेव के पाँच शिवलिंग जिनका अभिषेक समुद्र अपने जल से लगातार करते रहता है, देखने लायक है। और अंतिम में नागोवा बीच जो नहाने के लिए एक सुरक्षित बीच है और जहाँ बच्चों एवं बड़ों के लिए एक से एक मनोरंजक समुद्री सवारी भी है जिसका हमने काफी लुप्त उठाया। पूरे सोमनाथ से दीव तक आप बहुत ही सस्ते, लगभग 20 से 40 रूपए, में मीठे नारियल पानी का आनन्द ले सकते हैं। अर्थात् साधारण पीने योग्य पानी की जगह नारियल पानी ही श्रेयस्कर है। लौटते समय श्रवण ने प्राची तीर्थ का भी दर्शन कराया जो पिंड दान के लिए बिहार के मगध क्षेत्र के गया की तरह ही विश्वविख्यात है। कहते

हैं भगवान श्रीकृष्ण ने यहीं पर सरस्वती नदी के किनारे अपने सभी यदुवंशियों का पिंडदान किया था। यहाँ पर मंदिर सरस्वती नदी के तल में है जिससे भगवान के मूर्ति के पैर हमेशा नदी के पानी से धुलते रहते हैं।

हमारी इस सौराष्ट्र यात्रा का अवसान आ गया था अतः श्रवण ने हमें वेरावल रेलवे स्टेशन पर छोड़ दिया जहां से हमें अहमदाबाद वापस लौटना था और फिर विमान से पटना। एयर पोर्ट पर रोचक जी से पुनः मुलाकात हुई और साथ में एक और मित्र प्रवीण जी से, जो अपने परिवार के साथ गुजरात की यात्रा के बाद सपरिवार वापस पटना लौट रहे थे। सौराष्ट्र की यादों में खोये दो घंटे की यात्रा पता नहीं कब गुजर गयी कि तभी विमान के चालक दल की ओर से पटना पहुंचने की उद्घोषणा हुई और साथ में यह भी बताया गया कि पटना का तापमान 11 डिग्री है जिस कारण हमने उन यादों को अपने अंदर समेट कर तथा गरम कपड़ों को फिर से निकाल अपने घर की ओर चल पड़े। ◆



सभी फोटो लेखक के सौजन्य से

अनुत्तरित प्रश्न



✍ राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पुल पर खड़े हैं लोग
आर या पार जाने के लिए नहीं
जीवन के आनंद के लिए
हर पल को सेल्फी में कैद करने के लिए
नदी में पुल की छाया है
नदी में तैर रही है घास
अचानक दानवी बन गयी छाया
नदी में तैरने लगी लाश

अब पुल टूट चुका है
एक चोटिल अपराधी की तरह
क्षितिज पर डूब गया है सूरज
इस हादसे से बेपरवाह

दरअसल पुल पुराना था
इसका गिरना तो था तय
डूबते सूरज को देखती भीड़
भूल गयी थी कल का सूर्योदय



संवेदनशील सरकार का मुआवजा संदेश
मृतकों को छह लाख घायलों को पचास हजार
एक प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है
दुर्घटना गॉड की है या फ्रॉड का उपहार।



आँखों की शोखी



✍ अलख प्रसाद
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आँखों की शोखी
कहाँ खो गई है ।
क्या जाने अब क्यूँ
इतनी सोगवार रहती है तू !
जाने कौन—सा काँटा
तिरे नाजुक—से दिल में
जा धंसा है ।
वो रस्ते, वो बाम
ये सुबह, ये शाम
तिरे साथ ही खामोश
हो गए हैं मानो ।
हवा भी खो गई है
तेरी जुल्फों को
ढूँढती फिर रही है ।
किस वजह तू गुमगीन है
काश! अगर जानता मैं
कहीं से भी ढूँढ लाता
गर तेरी खुशी पहचानता मैं ।



सेवानिवृत्ति

“उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाए”

—बशीर बद्र

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार परिवार के निम्नलिखित कार्मिक अपने कार्यालयीन दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत्त हुए हैं। प्रहरी परिवार उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करता है।

क्र.स.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	श्री पी.सी. सिन्हा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31 दिसम्बर, 2022
2.	श्री सुदिप्ता गुप्ता	पर्यवेक्षक	31 जनवरी, 2023
3.	श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28 फरवरी, 2023
4.	श्री जनार्दन यादव	एम.टी.एस.	28 फरवरी, 2023

अच्छा इंसान बनो, अच्छे लोगों की सबसे बड़ी खूबी यह होती है
कि उन्हें याद नहीं रखना पड़ता, वो याद रह जाते हैं।

—अटल बिहारी वाजपेयी

श्रद्धांजलि

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना में कार्यरत निम्नलिखित कार्मिकों का असामयिक निधन हो गया। प्रहरी परिवार उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता है। ईश्वर से कामना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दें एवं परिजनों को दुःख सहन करने का संबल प्रदान करें।

स्व. संजीव कुमार वर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मृत्यु की तिथि— 8 नवम्बर, 2022

स्व. अनुपम पाण्डेय

लिपिक

मृत्यु की तिथि— 8 जनवरी, 2023

स्व. पंकज कुमार चौधरी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मृत्यु की तिथि— 1 मार्च, 2023

हिंदी पखवाड़ा-2022 की झलकियाँ



लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह की तस्वीरें

निबंध प्रतियोगिता



लेखापरीक्षा जागरूकता सप्ताह की तस्वीरें

रंगोली प्रतियोगिता



रंगोली प्रतियोगिता



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता



प्रभात फेरी एवं स्वच्छ भारत कार्यक्रम



प्रभात फेरी एवं स्वच्छ भारत कार्यक्रम



ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम



पैनल डिस्कसन कार्यक्रम



पैनल डिस्कसन कार्यक्रम



सांस्कृतिक कार्यक्रम



सांस्कृतिक कार्यक्रम

